हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 21 दिसंबर 2025

11 ऑपरेशन जीवन ज्योति : नशा मुक्त समाज की दिशा में कदम...

12 विद्यार्थियों ने चंद्रयान-5 का मॉडल बनाकर लूटी वाहवाही

खबर संक्षेप

अल्प्राजोलम की गोलियों सहित तस्कर गिरफ्तार

फतेहाबाद। फतेहाबाद पुलिस ने नशा तस्करों पर कार्रवाई करते हुए एक युवक को भारी मात्रा में नशीली गोलियों के साथ गिरफ्तार किया है। सीआईए फतेहाबाद प्रभारी उपनिरीक्षक वेदपाल ने बताया कि एएसआई सुखविंदर सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम अपराध रोकथाम के लिए गश्त पर थी। इसी दौरान सूचना के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई की। पुलिस द्वारा की गई तलाशी के दौरान आरोपी के कब्जे से 2400 अल्प्राजोलम टैबलेट्स बरामद की गई।

जिला स्तरीय ग्रामीण क्रिकेट टूर्नामेंट 24 को

फतेहाबाद। नौजवान भारत सभा के 100 साल पूरे होने और शहीद उधम सिंह की जयंती व शहीदे-ए-आजम भगत सिंह की याद में गांव बहबलपुर में जिला स्तरीय ग्रामीण क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। भारत की जनवादी नौजवान सभा द्वारा मुख्तयार सिंह मैमोरियल कॉलेज व रॉयल पब्लिक स्कूल बहबलपुर के सहयोग से 24 दिसंबर को मुख्तयार सिंह मैमोरियल कॉलेज बहबलपुर के क्रिकेट स्टेडियम में इस टूर्नामेंट का आयोजन किया जाएगा। इस टूर्नामेंट में जिलेभर के विभिन्न गांवों से टीमें भाग लेंगी।

समय पर सूचना न देने पर ईओ को नोटिस जारी

टोहाना। जनसूचना अधिकार के तहत समय पर सूचना न देने पर राज्य सूचना आयोग ने टोहाना नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी को नोटिस जारी किया है। नोटिस में उन्हें 5 फरवरी को राज्य सूचना आयोग कार्यालय पंचकूला में तलब किया गया है। बता दें कि इस विभाग का प्रथम अपीलीय अधिकारी भी कार्यकारी अधिकारी ही हैं, जिस कारण अक्सर सूचनाएं प्रदान नहीं की जाती हैं और आरटीआई आवेदनों को गंभीरता से नहीं लिया जाता। इस बारे टोहाना निवासी पवन कुमार बांसल ने वर्ष 2024 में नगरपरिषद से आरटीआई एक्ट के तहत सूचना प्राप्त करने के लिए आवेदन किया था। नगर परिषद कार्यालय द्वारा एक साल से अधिक समय तक यह जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई।

अवैध हथियार मामले में युवक को किया गिरफ्तार

फतेहाबाद। भट्टूकलां पुलिस ने 315 बोर पिस्टल रखने के एक मामले में युवक को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी उपनिरीक्षक राधेश्याम ने बताया कि 3 अगस्त को पुलिस टीम खाराखेड़ी रोड, तहसील भट्टूकलां में गश्त पर थी। इसी दौरान कार्रवाई की गइ इस दौरान संदिग्ध युवक को पकडक़र तलाशी लेने पर उसके कब्जे से नाजायज 315 बोर पिस्टल और एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ। इस मामले में थाना भट्टूकलां में आर्म्ज एक्ट के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया था। पुलिस ने अब इस मामले में सहआरोपी की पहचान करते हुए उसे भी गिरफ्तार किया।

47 दिनों में 7 तहसीलों में केवल 3279 पेपरलेस रजिस्ट्रियां हुई

पुराने सिस्टम की तुलना में 50% कम हो रही रजिस्ट्रियां, पोर्टल पर खामियां बाकी

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

पेपरलेस रजिस्ट्री सिस्टम को डेढ़ माह से अधिक समय हो चुका है, लेकिन अभी व्यवस्था पटरी पर लौटती नहीं दिख रही है। हालांकि जिले की तहसीलों में रजिस्ट्रियां हो रही हैं, लेकिन संख्या में इजाफा नहीं हो पा रहा है। डेढ़ माह में जिले की 7 तहसीलों में अभी तक सिर्फ 3279 रजिस्ट्रियां ही हो सकी हैं। इसमें फतेहाबाद तहसील में सर्वाधिक 1165 और टोहाना में 831 रजिस्ट्री हुई हैं। पुराने सिस्टम की तुलना में नए सिस्टम की गति धीमी है। इस समयांतराल में फतेहाबाद और टोहाना में रजिस्ट्रियों की संख्या ही करीब 5 हजार से ज्यादा होती थी। रजिस्ट्री के पोर्टल में अभी कई खामियां लोगों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई हैं। रिवर्ट का ऑप्शन आने के बाद लोगों को ज्यादा राहत नहीं मिली बल्कि कुछ संशोधन करने का मौका मिला है। ज्यादा चेंज नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा वसीयत में भी अभी कैंसिल कराने वाले के साथ वसीयत करवाने वाले को भी आना होगा। यही नहीं, खाना काश्त की समस्या भी अभी तक दूर नहीं हुई। इसके साथ जमीन परिवर्तन में लोग परेशानी भुगत रहे हैं।

वसीयत, खाना काश्त और जमीन परिवर्तन में लोग हो रहे परेशान

●

रिवर्ट ऑप्शन से भी नहीं मिली राहत

फतेहाबाद। ई दिशा केंद्र में पेपरलेस रजिस्ट्री प्रक्रिया की जानकारी लेते उपायुक्त डॉ. विवेक भारती। *(फाइल फोटो)*

नए सिस्टम में अभी ये आ रहीं दिक्कतें

रजिस्ट्री के पोर्टल पर सिस्टम सब रजिस्ट्रार सिटीजन को उसका आवेदन कमियां दूर करने के लिए रिवर्ट कर सकता है लेकिन इसमें अपलोड किए दस्तावेज और फोटोग्राफ बदलने के अलावा अन्य कोई ऑप्शन नहीं है। जैसे रजिस्ट्री महिला के नाम करानी हो, आवेदन में पुरुष भरा गया तो ये चेंज नहीं होगा। ऐसे में आवेदक को 509 रुपए खर्च करके दोबारा से आवेदन करना होगा। वसीयत कैंसिल करानी है तो वसीयत करने वाला ही कर सकता है लेकिन पोर्टल पर वसीयत कराने वाले का होना भी जरूरी है। ये खामी है। अगर जमीन कृषि की है तो उसे चेंज कराने का ऑप्शन पोर्टल पर नहीं है। किसी को सोलर लीज करानी है तो उसकी पोर्टल पर व्यवस्था नहीं है। वहीं खाना काश्त का ऑप्शन काम नहीं कर रहा है। पोर्टल पर तहसील कर्मी भी समस्या का सामना कर रहे हैं। इसमें एक माह में रजिस्ट्री कितनी हुई और साथ कितना स्टांप लगा, इसकी रिपोर्ट मैन्यूली तैयार करनी पड़ती है।

डेढ़ माह में ऑनलाइन इंतकाल नहीं हुए

पेपरलेस रजिस्ट्री के दौरान जिला प्रशासन ने दावा किया था कि रजिस्ट्री के कुछ ही समय बाद इंतकाल भी ऑनलाइन होना शुरू हो जाएगा। अभी तक 3279 रजिस्ट्रियां हो चुकी हैं लेकिन इंतकाल एक भी नहीं हुआ है। पिछले इंतकाल भी बाकी होने से इनकी पेंडेंसी बढ़ रही है। पेपरलेस रजिस्ट्री में इंतकाल न होने के मामले में एक कनूनगो ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि नए सिस्टम में इंतकाल की व्यवस्था की जा रही है। रजिस्ट्री के दौरान तीसरी पीढ़ी दर्ज तो होती है लेकिन शो नहीं होती। ऐसे में इंतकाल में दिक्कत है।

पेपरलेस रजिस्ट्री सिस्टम पटरी पर लौट रहा: तहसीलदार

तहसील में पेपरलेस रजिस्ट्री सिस्टम पटरी पर लौट रहा है। अब तहसीलों में रजिस्ट्रियों की संख्या में लगातार बढ़ रही है। इंतकाल होने की भी व्यवस्था की जा रही है। जल्द इंतकाल भी ऑनलाइन शुरू हो जाएंगे।

*-**विकास कुमार**, नायब तहसीलदार, फतेहाबाद।*

फतेहाबाद। शहर का नया बस स्टैण्ड। *फोटो: हरिभूमि*

धुंध में दृश्यता 25 मीटर तक सिमटी 6 से अधिक ट्रेनें 4 घंटे देरी से पहुंची

- दिल्ली-चण्डीगढ़ से आने वाली रोडवेज की बसें देरी से पहुंच रही

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

शनिवार को भी फतेहाबाद जिले में अलसुबह कोहरे के कारण दृश्यता कम हो गई। सुबह 5 बजे के बाद सडक़ों पर हालात यह थी कि कुछ मीटर दूर भी कुछ नजर नहीं आ रहा था। जिले में घने कोहरे के कारण सड़क व रेल सेवाओं पर काफी असर पड़ रहा है। कोहरे के कारण सड़कों पर वाहनों की स्पीड कम पड़ गई है वहीं ट्रेनें भी काफी देरी से पहुंच रही है। फतेहाबाद में आज अनेक रोडवेज अपने निर्धारित समय से लेट पहुंची वहीं जाखल से गुजरनी अनेक ट्रेनों के लेट होने से यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बस स्टैण्ड व रेलवे स्टेशन पर यात्री भीषण ठंड में इंतजार करते नजर आए। उधर, धुंध के चलते रोडवेज की लंबी दूरी तक चलने वाली बसें अपने गंतव्य तक 3 से 4 घंटे देरी से पहुंची। यहां से चण्डीगढ़, दिल्ली, जयपुर, जम्मू व हरिद्वार के लिए जाने बसें 4 घंटे देरी से पहुंची जबकि वहां से आने वाली बसें भी सडक़ों पर रेंगते हुई पहुंची। दरअसल धुंध के कारण दृश्यता कम होने से वाहन चालकों को फॉग लाइट का सहारा लेना पड़ता है लेकिन फतेहाबाद रोडवेज की काफी बसों में अभी तक फॉग लाइटें नहीं लगाई गई है जिस कारण चालकों को काफी परेशानियों से जूझना पड़ रहा है। बता दें कि यहां से चण्डीगढ़ हाईकोर्ट प्रतिदिन काफी लोग अपनी कानूनी लड़ाई के लिए जाते हैं। ऐसे ही चण्डीगढ़ पढने वाले यहां के विद्यार्थियों का भी आना-जाना रहता है। कोहरे में परिवहन सेवाएं प्रभावित होने से सभी वर्गों के लोग परेशान हैं।

यात्रियों को परेशानी

ट्रेनों की बात करें तो जाखल में पातालकोट एक्सप्रेस और फरक्का एक्सप्रेस 4 घंटे, भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस 4 घंटे, सरबत दा भला एक्सप्रेस और बठिंडा सुपरफास्ट एक्सप्रेस डेढ़ घंटा, जबकि हिसार-जींद पैसेंजर 30 मिनट की देरी से चल रही है। इसके अलावा कुछ ट्रेनें 4 घंटे से अधिक लेट चल रही हैं। रात में आने वाली ट्रेनें सबसे अधिक प्रभावित हुई हैं। यात्रियों को प्लेटफॉर्म और वेटिंग हॉल में कड़ाके की ठंड में अपनी गाड़ियों का घंटों इंतजार करना पड़ रहा है। जाखल रेलवे स्टेशन अधीक्षक चांद राम दहिया ने यात्रियों से अपील की है कि वे घर से निकलने से पहले अपनी ट्रेन की ताजा स्थिति की जानकारी अवश्य लें। रेलवे स्टेशन अधीक्षक ने यात्रियों को समय से पहले स्टेशन पहुंचने और रेलवे द्वारा जारी सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की भी सलाह दी है, ताकि कोहरे के इस मौसम में किसी भी असुविधा या जोखिम से बचा जा सके।

रतिया में टैक्सी स्टैंड के पास मृत मिला युवक ठंड से मौत की आशंका

रतिया। शहर में संदिग्ध परिस्थितियों में एक युवक की मौत होने का समाचार है। युवक का शव शनिवार सुबह शहर में टोहाना रोड स्थित टैक्सी स्टैण्ड के पास से बरामद हुआ है। मृतक युवक की पहचान 25 वर्षीय नाजम सिंह निवासी पालसर के रूप में हुई है। इस बारे सूचना मिलते ही रतिया पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई और युवक को सरकारी अस्पताल लेकर पहुंची जहां जांच के बाद चिकित्सकों ने युवक को मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत का कारण ठंड लगना बताया जा रहा है। हालांकि पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही मौत के कारणों का पता चल पाएगा। मौके पर पहुंचे युवक के परिजनों ने बताया कि नाजम सिंह नशे का आदी था। वह शराब का भी अधिक मात्रा में सेवन करता था। शुक्रवार रात को शराब पीकर टैक्सी स्टैंड के पास ही पड़ा रहा। उन्होंने आशंका जताई कि रात में अधिक ठंड लगने के कारण उसकी मौत हो गई। शनिवार सुबह आसपास से गुजर रहे लोगों ने उसे अचेत अवस्था में पड़ा देखा, तो पुलिस को सूचना दी। सिटी थाना प्रभारी पुष्पा सिहाग ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का पता चल सकेगा।

तीन हेरोइन तस्कर काबू

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

पुलिस ने ऑपरेशन हॉटस्पॉट डोमिनेशन अभियान के तहत नशा तस्करों पर कार्रवाई करते हुए सिरसा जिले क्षेत्र से तीन तस्करों को लाखों रुपये की हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। सिरसा शहर थाना प्रभारी इंस्पेक्टर संदीप कुमार ने शनिवार को बताया पुलिस टीम गश्त के दौरान कीर्ति नगर से होते जगदंबे पेपर मिल की तरफ जा रही थी। जगदंबे पेपर मिल के नजदीक एक स्कूटी सवार युवक आता दिखाई दिया। पुलिस ने शक के आधार पर उसे काबू कर लिया और तलाशी ली तो उसके कब्जे से हेरोइन बरामद हुई। आरोपी की पहचान प्रदीप उर्फ दीपू निवासी सिरसा के रूप में हुई है। इसके अलावां एंटी नारकोटिक सेल सिरसा ने गांव बप्पां क्षेत्र से बलदेव सिंह को हेरोइन सहित काबू किया है। रोड़ी थाना पुलिस ने गांव मलड़ी क्षेत्र से आरोपी गुरप्रीत सिंह निवासी संघापती रोडी जिला सिरसा को काबू कर उसके कब्जे से हेरोइन बरामद की है। उन्होंने बताया कि तीनों आरोपियों से करीब 23 ग्राम हेरोइन बरामद की गई है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार किए गए युवकों के खिलाफ संबंधित थानों में मादक पदार्थ अधिनियम के तहत मामले दर्ज कर जांच की जा रही है।

तीनों आरोपियों से करीब 23 ग्राम हेरोइन बरामद

कबीर बस्ती में हेरोइन सहित युवक को पकड़ा

फतेहाबाद। नशा बेचने वालों का नया अड्डा बन चुकी कबीर बस्ती में छापेमारी कर एंटी नारकोटिक सेल द्वारा एक युवक को हेरोइन सहित गिरफ्तार किया गया है। एएनसी टीम प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद राय ने बताया कि एएनसी टीम गश्त व नशीले पदार्थों की रोकथाम के संबंध में सरकारी अस्पताल के पास कबीर बस्ती की ओर गश्त कर रही थी। इसी दौरान शीतला माता मंदिर के पास एक युवक पुलिस वाहन को देखकर घबराकर पीछे मुडक़र तेज कदमों से चलने लगा। शक के आधार पर युवक को काबू कर पूछताछ की गई। आरोपी ने अपनी पहचान अरुण कुमार पुत्र अशोक कुमार निवासी भराण जिला रोहतक, हाल गुरूनानकपुरा मोहल्ला फतेहाबाद के रूप में बताई वा तलाशी के दौरान आरोपी के कब्जे से 6.56 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। इस संबंध में थाना शहर फतेहाबाद में उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी करेंगे शिरकत

वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में 26 को सिरसा में होगा राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य में आगामी 26 दिसंबर को सीडीएलयू सिरसा में आयोजित किए जाने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर शनिवार को मुख्यमंत्री के ओएसडी डॉ प्रभलीन सिंह ने जिला प्रशासन के अधिकारियों व गणमान्य के साथ विचार विमर्श किया। बैठक में अतिरिक्त उपायुक्त वीरेंद्र सहरावत, पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय (सीडीएलयू) के कुलपति प्रो. विजय कुमार, एसडीएम राजेंद्र कुमार, जिला परिषद के सीईओ डॉ. सुभाष चंद्र, मुख्यमंत्री के पूर्व सलाहकार जगदीश चोपड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष यतींद्र सिंह एडवोकेट, रेणु शर्मा सहित हरियाणा सिख गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य व अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। बैठक में मौजूद सदस्यों व अन्य गणमान्यों ने भी आयोजन को सफल बनाने के लिए अपने सुझाव दिए। इस दौरान कार्यक्रम की संपूर्ण रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई।

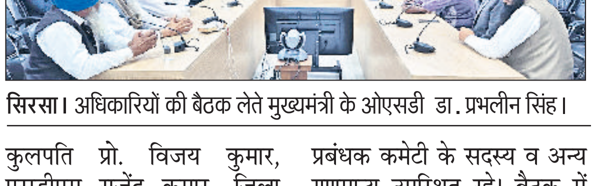

सिरसा। अधिकारियों की बैठक लेते मुख्यमंत्री के ओएसडी डा. प्रभलीन सिंह।

निर्देश दिए

अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि राज्य स्तरीय समारोह को बेहद गरिमामय, सुव्यवस्थित एवं अनुशासित ढंग से आयोजित किया जाए, ताकि वीर बाल दिवस के ऐतिहासिक महत्व और उसके संदेश को प्रभावी रूप से जन-जन तक पहुंचाया जा सके। मुख्यमंत्री के ओएसडी डॉ प्रभलीन सिंह ने कहा कि वीर बाल दिवस पर यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि देश की युवा पीढ़ी को साहस, त्याग और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देने का अवसर है।

निवेश लिए अगले साल लें स्मार्ट फैसला, तभी कर पाएंगे कमाई

मल्टी-एसेट में मिलेगा बढ़िया रिटर्न

- इस साल 2025 में गोल्ड और सिल्वर में रही मजबूत रैली
- बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश न करें
- बेहतर है लंबी अवधि और डायवर्सिफाइड निवेश रणनीति अपनाएं
- जिससे सेंटीमेंट के आधार पर फैसले लेने से बचा जा सकेगा
- शॉर्ट टर्म रिटर्न के बजाय अनुशासन व लंबी अवधि पर करें फोकस

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

साल 2025 वैश्विक और घरेलू स्तर पर निवेशकों के लिए उतार-चढ़ाव भरा रहा है। टैरिफ, जियो-पॉलिटिकल टेंशन, जीएसटी सुधार और आईपीओ की बढ़ती गतिविधियों के बीच शेयर बाजार लंबे समय तक सीमित दायरे में घूमता रहा। हालांकि साल के दूसरे हिस्से में बाजार में धीरे-धीरे सुधार के संकेत दिखने लगे। इसी दौरान 2 एसेट क्लास सोना और चांदी ने निवेशकों को सबसे ज्यादा अट्रैक्ट किया। जहां सोने ने इस कैलेंडर ईयर में अबतक 63% रिटर्न दिया, वहीं चांदी ने 100% से ज्यादा की तेजी दिखाई, जिससे निवेशकों की दिलचस्पी एक बार फिर वैकल्पिक एसेट्स की ओर बढ़ी। बीते रिटर्न को देखकर निवेश करना अक्सर गलत फैसलों की वजह बनता है। तेजी के बाद निवेश करने का ट्रेंड, जिसे रिटर्न के पीछे भागना" कहा जाता है, लंबे समय में नुकसान भी पहुंचा सकती है। ऐसे माहौल में विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश करने के बजाय निवेशकों को लंबी अवधि की सोच, अनुशासन और मल्टी-एसेट डायवर्सिफिकेशन पर ध्यान देना चाहिए। अलग-अलग एसेट क्लास में संतुलित निवेश न सिर्फ रिस्क को कम करता है, बल्कि समय के साथ कंपाउंडिंग के जरिए बेहतर रिटर्न देने की क्षमता रखता है।

रिटर्न के पीछे भागना गलत स्ट्रैटेजी

लॉन्ग टर्म रिटर्न चार्ट देखें तो पता चलेगा कि सोने में निवेशकों का इंटरेस्ट तब तेजी से बढ़ता है, जब इसके रिटर्न तेजी से बढ़ने लगते हैं, लेकिन जैसे ही कीमतें गिरती हैं, यह इंटरेस्ट भी कम हो जाता है। यह प्रतिक्रिया पर आधारित तरीका साफ बताता है कि निवेश में अनुशासन और निरंतरता कितनी जरूरी है। बाजार का सही समय पकड़ने की कोशिश करने की बजाय, निवेशकों के लिए बेहतर है कि वे लंबी अवधि और डायवर्सिफाइड निवेश रणनीति अपनाएं, जिससे सेंटीमेंट के आधार पर फैसले लेने से बचा जा सके। इसे अपनाने का एक असरदार तरीका है आउटसोर्स्ड एसेट एलोकेशन, यानी ऐसे फंड्स में निवेश करना जो अलग-अलग एसेट क्लास में अपने आप निवेश को संतुलित करते हैं।

क्यों जरूरी है डायवर्सिफिकेशन

सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास के पीछे भागना, चाहे तेजी के समय शेयर हों या गिरावट के समय सोना, अक्सर गलत समय पर निवेश करने और बाजार के अधिक उतार-चढ़ाव का जोखिम बढ़ा देता है। डायवर्सिफिकेशन इन जोखिम को कम करता है, क्योंकि इसमें पैसा अलग-अलग एसेट्स में लगाया जाता है जो अलग परिस्थितियों में अलग तरह से व्यवहार करते हैं। लेकिन अब यह ट्रेंड फिर से बदल रहा है। जून 2024 से, बाजार ने एक बार फिर तेज ग्रोथ और अच्छी क्वालिटी वाली कंपनियों को बेहतर रिटर्न देना शुरू कर दिया है। इन कंपनियों ने अप्रैल 2023 से मई 2024 के दौरान हुए अपने खराब प्रदर्शन का एक-चौथाई से ज्यादा हिस्सा वापस हासिल कर लिया है। इसलिए निवेशकों को शेयरों में भी अलग-अलग स्टाइल में निवेश करके पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करना चाहिए।

समझदारी दिखाएं

आज की दुनिया में, जहां बदलाव लगातार हो रहा है, समझदारी से किया गया डायवर्सिफिकेशन एक मजबूत पोर्टफोलियो बनाने के लिए सिर्फ अच्छा नहीं, बल्कि बहुत जरूरी है। निवेशकों को शॉर्ट टर्म रिटर्न के बजाय संतुलन, अनुशासन और लंबी अवधि की रणनीति पर ध्यान देना चाहिए। इसलिए, अलग-अलग एसेट्स में डायवर्सिफाइड मल्टी-एसेट पोर्टफोलियो को जोखिम और रिटर्न के सही संतुलन में मदद करने दें, ताकि समय के साथ कंपाउंडिंग अपना कमाल दिखा सके।

प्रमुख एसेट क्लास और उनका व्यवहार

आज के आपस में जुड़े हुए और उतार-चढ़ाव भरे ग्लोबल वित्तीय माहौल में, सिर्फ एक ही एसेट क्लास पर भरोसा करना निवेशकों के लिए बेवजह का जोखिम पैदा कर सकता है, चाहे उसने हाल ही में कितना भी अच्छा प्रदर्शन क्यों न किया हो। इस समय मुख्य एसेट क्लास किस तरह का व्यवहार कर रहे हैं।

सोना और चांदी

ये कीमती धातुएं पारंपरिक रूप से सुरक्षित निवेश मानी जाती हैं। महंगाई के समय या जब सामान्य करेंसी (फिएट करेंसी) कमजार होती है, तब ये अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। चांदी का इस्तेमाल इंडस्ट्री में भी होता है, इसलिए यह इकोनॉमिक साइकिल से ज्यादा प्रभावित होती है। इससे इसमें उतार-चढ़ाव भी ज्यादा होता है, लेकिन मौके भी मिलते हैं।

शेयर (इक्विटी)

शेयरों में बढ़त की अच्छी संभावना होती है, खासकर उन क्षेत्रों में जो नई तकनीक और इनोवेशन से जुड़े होते हैं, लेकिन ये ब्याज दरों, कंपनियों की कमाई के अनुमान और आर्थिक बदलावों के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं। अलग-अलग देशों और इंडस्ट्री में इनका प्रदर्शन काफी अलग हो सकता है।

फिक्स्ड इनकम (बॉन्ड)

बॉन्ड अपेक्षाकृत स्थिरता और फिक्स्ड इनकम देते हैं। हालांकि ब्याज दरें बढ़ने पर बॉन्ड की कीमतों पर दबाव आ सकता है, फिर भी ये जोखिम कम करने और पूंजी को सुरक्षित रखने के लिए बहुत जरूरी होते हैं। खासकर सतर्क निवेशकों या

रिटायरमेंट के करीब लोगों के लिए ये काफी उपयोगी हैं।

रियल एसेट्स और वैकल्पिक निवेश

रियल एस्टेट, इंफ्रास्ट्रक्चर और कमोडिटीज महंगाई से बचाव करने और निवेश में डाइवर्सिफिकेशन लाने में मदद कर सकते हैं। वहीं, प्राइवेट इक्विटी और हेज फंड जैसे वैकल्पिक निवेश रिटर्न बढ़ा सकते हैं, लेकिन इनमें जोखिम अधिक होता है और पैसा जल्दी निकालना आसान नहीं होता।

(डिस्क्लेमर : यह आर्टिकल ब्रोकरेज हाउस की रिपोर्ट के आधार पर जानकारी के उद्देश्य से दिया है। यह फाइनेंशियल एक्सप्रेस के निजी विचार नहीं हैं। किसी कैटेगरी में निवेश की सलाह ब्रोकरेज हाउस के द्वारा दी गई है। बाजार में जोखिम होते हैं, इसलिए निवेश के पहले एक्सपर्ट की सलाह लें।)

विदेश घूमने का है प्लान तो ट्रैवल इंश्योरेंस लेते समय न करें गलतियां

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी विदेश में घूमने का प्लान बना रहे हैं तो कुछ सावधानियां बरतें और विदेश जाने से पहले ट्रैवल इंश्योरेंस की बारीकियों को अच्छे से समझ लें, ताकि कवरेज, सब-लिमिट या बीमारी छिपाने जैसी गलती से आपका क्लेम अटके नहीं। वरना आपको इससे भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। अक्सर विदेश घूमने की प्लानिंग में फ्लाइट, होटल, घूमने-फिरने की जगहें सब कुछ सोच लिया जाता है, लेकिन ज्यादातर लोग इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस को हल्के में ले लेते हैं, जबकि बाहर कुछ अनहोनी हो जाए तो यही इंश्योरेंस बड़ा सहारा बन सकता है। जानकारों का कहना है कि भारतीय यात्री अक्सर कुछ आम गलतियां कर बैठते हैं, जिनसे बाद में भारी नुकसान हो सकता है। इसलिए कभी भी विदेश घूने के लिए जाएं तो इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस के बारे में अच्छे से जान लें। इससे आप आसानी से बिना किसी चिंता के विदेश घूम सकेंगे। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ नियम जो आपको विदेश जाने के दौरान होने वाली परेशानियां से बचाएंगे और सुरक्षित रखेंगे।

कवरेज की रकम कम रखना सबसे बड़ी भूल

शेंगेन देशों के लिए वीजा लेने के लिए कम से कम 30,000 यूरो का कवर जरूरी होता है, लेकिन ये सिर्फ वीजा की शर्त है, सुरक्षा के लिए नहीं। अमेरिका या यूरोप जैसे देशों में मेडिकल खर्चा बहुत ज्यादा होता है। वहां एक दिन आईसीयू में रहने से ही पूरी कवरेज रकम खत्म हो सकती है और बाकी लाखों रुपये खुद की जेब से देने पड़ सकते हैं। इसलिए सावधानी बरतें और ध्यान रखें।

पहले से मौजूद बीमारियां छिपाना भारी

कई लोग डायबिटीज या हाई ब्लड प्रेशर जैसी पुरानी बीमारियां छिपा देते हैं, ताकि प्रीमियम कम देना पड़े। अगर विदेश में हॉस्पिटल में भर्ती होना पड़े और वो बीमारी छिपाई गई पुरानी बीमारी से जुड़ी हुई निकले, तो क्लेम तुरंत रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए जब भी इंटरनेशनल ट्रैवल इंश्योरेंस लें तो अपनी सारी बीमारियों का उल्लेख करें। इससे क्लेम लेने में परेशानी होगी।

सिर्फ मेडिकल कवर पर ध्यान न दें

ट्रैवल इंश्योरेंस में सिर्फ इलाज ही नहीं, फ्लाइट डिले, कैंसिलेशन और सामान खोने जैसी परेशानियों का भी कवर मिलता है। "अगर फ्लाइट छह घंटे से ज्यादा लेट हो जाए तो होटल और खाने का खर्चा क्लेम किया जा सकता है। सामान खोने पर एयरलाइन का लिखित डॉक्यूमेंट जरूर रखें, वरना इंश्योरेंस कंपनी क्लेम नहीं मानेगी।" इसलिए सिर्फ मेडिकल कवर ही नहीं, बाकी चीजों पर ध्यान न दें, ताकि किसी आपात स्थिति में आपको परेशानी का सामना न करना पड़े।

सब-लिमिट को नजरअंदाज करना

कई पॉलिसी में रूम रेंट या सर्जरी जैसे खर्चों पर अलग-अलग कैप यानी सब-लिमिट होती है। "भले ही कुल कवरेज रकम ज्यादा हो, लेकिन सब-लिमिट की वजह से क्लेम में बहुत कटौती हो सकती है।" इसलिए सब लिमिट पर भी ध्यान दें, ताकि बाद में पछताना न पड़े। इससे आप आसानी से क्लेम कर सकेंगे। अपनी ट्रिप के हिसाब से सही इंश्योरेंस चुनें कवरेज रकम और फीचर्स आपकी यात्रा की जगह, मकसद और दिनों के हिसाब से होने चाहिए। जानकारों का कहना है कि आप जिस देश में जा रहे हैं, वहां इलाज का औसत खर्चा एक बार जरूर चेक कर लेना चाहिए। अमेरिका-यूरोप में इलाज का खर्च बहुत महंगा पड़ता है, जबकि साउथ ईस्ट एशिया या मिडिल ईस्ट में थोड़ा कम, लेकिन फिर भी काफी ज्यादा होता है। इसलिए पहले उस देश की स्थिति जरूी देख लें जहां आप घूमने जा रहे हैं।

यात्रा का मकसद

बिजनेस ट्रिप पर जाने वाले लोग फ्लाइट डिले, मिस्ड कनेक्शन और लैपटॉप-डिवाइस कवर को प्राथमिकता दें। घूमने-फिरने वाले लोगों को एडवेंचर स्पोर्ट्स, कार रेंटल या क्रूज कवर की जरूरत पड़ सकती है। "बुजुर्गों को पुरानी बीमारियां पूरी तरह बतानी चाहिए। कैशलेस हॉस्पिटलाइजेशन वाली पॉलिसी लें और कम खर्च वाले देशों में भी ज्यादा कवरेज रखें।" शुरू में आपको थोड़ा ज्यादा पैसा प्रीमियम के तौर पर देना पड़ सकता है, बाद में यह आपके लिए लाभकारी साबित हो सकता है।

एक्सक्लूजन और शर्तें ध्यान से देखें

एडवेंचर स्पोर्ट्स की सीमाएं : ज्यादातर पॉलिसी में सिर्फ लाइसेंस वाले इंस्ट्रक्टर की निगरानी में किए गए मनोरंजन वाले एक्टिविटी का कवर मिलता है। प्रोफेशनल लेवल पर प्राइज मनी वाली एक्टिविटी शामिल नहीं होती। एडवेंचर स्पोर्ट्स की सीमाएं देखकर ही बीमा करवाएं।

डिडक्टिबल और सब-लिमिट

डिडक्टिबल वो फिक्स रकम है जो आपको खुद देनी पड़ती है, उसके बाद इंश्योरेंस शुरू होता है। "लोग अक्सर नहीं जानते कि डिडक्टिबल से कम का क्लेम बिल्कुल नहीं मिलेगा।" विदेश यात्रा का इंश्योरेंस सिर्फ औपचारिकता नहीं है। सही तरीके से समझकर और अपनी जरूरत के मुताबिक लिया गया प्लान भारी-भरकम मेडिकल बिल, ट्रिप में रुकावट और दूसरी परेशानियों से बचा सकता है।

निवेशकों को खूब भाया फ्लेक्सी कैप फंड्स इस साल रहा टॉपर

बिजनेस डेस्क

एक साल में म्यूचुअल फंड मार्केट में फ्लेक्सी-कैप फंड्स सबसे बड़े विजेता बनकर उभरे हैं। यह दिखाता है कि उतार-चढ़ाव वाले बाजार में निवेशक अब ज्यादा लचीलापन चाहते हैं। फ्रैंकलिन टेम्पलटन म्यूचुअल फंड की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, बीते 12 महीनों में फ्लेक्सी-कैप फंड्स में सभी इक्विटी कैटेगरी में सबसे ज्यादा निवेश आया है। पिछले 12 महीनों में इन फंड्स में करीब 75,700 करोड़ का नेट निवेश दर्ज किया गया। निवेशकों ने इसमें बढ़-चढ़कर निवेश और अपनी पूंजी बढ़ाई। इस फंड में मिल रहे अच्छे रिटर्न के कारण ही यह इस सबसे लोकप्रिय फंड बनकार उभरा और निवेशकों का धन बढ़ाने का काम किया।

इक्विटी की मजबूती से बूस्ट

फ्लेक्सी-कैप फंड्स के अच्छे प्रदर्शन से कुल इक्विटी-बेस्ड म्यूचुअल फंड्स की हिस्सेदारी बढ़ी है। अब इक्विटी स्कीमें कुल म्यूचुअल फंड एयूएम का करीब 60% हिस्सा रखती हैं, जो बताता है कि रिटेल निवेशक हाई रिटर्न के लिए जोखिम लेने को तैयार हैं। एसआईपी के जरिए इक्विटी फंड्स में लगातार पैसा आ रहा है, जिससे फ्लेक्सी-कैप फंड्स को लंबे समय का स्थिर निवेश मिल रहा। ये पोर्टफोलियो का हिस्सा बनते जा रहे हैं।

म्यूचुअल फंड का एसेट्स बैंक डिपॉजिट का एक तिहाई

घरेलू बचत के तरीके में अब साफ बदलाव दिखाई दे रहा है। म्यूचुअल फंड का कुल एयूएम बढ़कर 80.8 लाख करोड़ रुपये हो गया है, जो अब कुल बैंक डिपॉजिट का करीब 33% है। एक दशक पहले यह आंकड़ा सिर्फ करीब 13% था। यह बढ़ोतरी दिखाती है कि निवेशक पारंपरिक फिक्स्ड डिपॉजिट से धीरे-धीरे हटकर लंबे समय में ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की ओर बढ़ रहे हैं, खासकर फ्लेक्सी-कैप जैसे इक्विटी आधारित फंड्स की तरफ।

निवेशकों की सोच में बदलाव

पिछले 5 सालों में म्यूचुअल फंड की संपत्ति 22% की सालाना दर (सीएजीआर) से बढ़ी है, जो बैंक डिपॉजिट की करीब 11% की बढ़त से डबल है। यह बढ़ता गैप बताता है कि लोगों में वित्तीय जागरूकता बढ़ी है, मेट्रो शहरों के बाहर भी म्यूचुअल फंड की पहुंच मजबूत हुई है और प्रोफेशनल फंड मैनेजमेंट पर भरोसा बढ़ा है। ग्रोथ की संभावना और लचीलापन रखने वाले फ्लेक्सी-कैप फंड्स इस बदलाव के सबसे बड़े बेनेफिशियरीज में शामिल हैं।

- नेट सेल्स 12 महीनों में सबसे ज्यादा रही
- म्यूचुअल फंड का कुल एयूएम बढ़कर 80.8 लाख करोड़ हुआ
- फ्लेक्सी कैप की खासियत ये लार्ज, मिड व स्मॉल-कैप शेयरों में निवेश बदलते रहते हैं

फ्लेक्सी-कैप फंड की पॉपुलैरिटी बढ़ी

फ्लेक्सी-कैप फंड्स की बढ़ती लोकप्रियता व घरेलू बचत में म्यूचुअल फंड की बढ़ती हिस्सेदारी यह साफ दिखाती है कि भारत में निवेश की सोच बदल रही है। निवेशक अब बाजार से जुड़े विकल्पों में ज्यादा पैसा नहीं लगा रहे, बल्कि ऐसे फंड भी चुन रहे हैं जो डायवर्सिफिकेशन और लचीलापन दोनों देते हैं। जैसे-जैसे म्यूचुअल फंड बैंक डिपॉजिट पर बढ़त बना रहे हैं, फ्लेक्सी-कैप फंड्स आने वाले समय में लंबी अवधि में संपत्ति बनाने की इस कहानी के केंद्र में बने रह सकते हैं।

क्या है फ्लेक्सी कैप फंड

फ्लेक्सी कैप फंड एक ओपन-एंडेड इक्विटी म्यूचुअल फंड है जो लार्ज, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में निवेश करता है। इसमें फंड मैनेजर को निवेश का लचीलापन होता है, जिससे वे बाजार की स्थितियों के अनुसार अपने पोर्टफोलियो को एडजस्ट कर सकते हैं।

फ्लेक्सी कैप फंड की विशेषताएं

- **लचीलापन:** फंड मैनेजर को निवेश का लचीलापन होता है, वे बाजार के अनुसार पोर्टफोलियो को एडजस्ट कर सकते हैं।
- **विविधता:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से लार्ज, मिड व स्मॉल कैप कंपनियों में विविधता मिलती है।
- **जोखिम और रिटर्न का संतुलन:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको जोखिम और रिटर्न का संतुलन मिलता है।
- **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** फ्लेक्सी कैप फंड लॉन्ग-टर्म ग्रोथ के लिए उपयुक्त होता है ।

फ्लेक्सी कैप फंड के लाभ

- **पेशेवर मैनेजमेंट:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको पेशेवर फंड मैनेजर्स की दक्षता और जानकारी का लाभ मिलता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** फ्लेक्सी कैप फंड में निवेश करने से आपको लार्ज, मिड और स्मॉल कैप कंपनियों में विविधता मिलती है।
- **लॉन्ग-टर्म ग्रोथ:** फ्लेक्सी कैप फंड लॉन्ग-टर्म ग्रोथ के लिए उपयुक्त होता है

ईपीएफ-एनपीएस से एफडी तक

2025 में बुजुर्गों को मिला कितना रिटर्न

जानकारी

बिजनेस डेस्क

इस साल भारत के बुजुर्गों के लिए सेवानिवृत्ति पर निवेश से मिले-जुले नतीजे सामने आए हैं। ज्यादातर फिक्स्ड इनकम वाले विकल्पों में रिटर्न स्थिर रहे, जबकि शेयर बाजार से जुड़े निवेश में काफी उतार-चढ़ाव दिखा। यह सब निवेश की मात्रा और सही समय पर निर्भर करता रहा। सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले सुरक्षित विकल्पों में रिटर्न अच्छे और स्थिर रहे। पेंशनबाजार के हेड विश्वजीत गोयल के मुताबिक, ईपीएफ ने 2024-25 के लिए 8.25 फीसदी ब्याज दिया। वहीं सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम (एससीएसएस) और सुकन्या समृद्धि योजना जैसी सरकारी छोटी बचत योजनाओं में 8.2 फीसदी का रिटर्न मिला। पोस्ट ऑफिस की जमा योजनाएं 6.9 से 7.5 फीसदी तक ब्याज दे रही थीं, जबकि बैंक फिक्स्ड डिपॉजिट में बुजुर्गों को 7 से 7.5 फीसदी के बीच मिला। कुल मिलाकर सुरक्षित विकल्पों में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया।

बाजार से जुड़े निवेश में बड़ा अंतर

मार्केट लिंक्ड विकल्पों की बात अलग थी। विश्वजीत गोयल बताते हैं कि नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) के इक्विटी स्कीमों ने एक साल में मिड-20 से लो-30 फीसदी तक रिटर्न दिया। कॉर्पोरेट बॉन्ड स्कीमों में करीब 9 फीसदी और सरकारी बॉन्ड स्कीमों में 4 से 6 फीसदी तक मिला।

- रिटायरमेंट निवेश का सचः 2025 में बुजुर्गों के रिटायरमेंट निवेश में फिक्स्ड इनकम स्थिर रहे
- वहीं, इक्विटी और एनपीएस में रिटर्न समय और निवेश के हिसाब से बदलते रहे

एक आम रिटायरमेंट के करीब व्यक्ति जिसने एनपीएस में बैलेंस्ड तरीके से पैसा लगाया, उसे कुल 8 से 12 फीसदी रिटर्न हाथ लगा, लेकिन शेयर बाजार इंडेक्स ने बहुत कम दिया। जानकारों के अनुसार, निफ्टी और सेंसेक्स टीआरआई ने वित्त वर्ष 2025 में महज करीब 6 फीसदी रिटर्न दिया।

निवेशकों की गलतियां

आर्थिक विशेषज्ञों का कहना है कि कई बुजुर्गों ने गलतियां कीं। ज्यादातर लोग बैंक डिपॉजिट में ही ज्यादा पैसा रखे रहे, टैक्स बचत वाले विकल्पों का फायदा नहीं उठाया या गलत एन्युटी प्लान चुन लिया, जिससे पेंशन कम हो गई या जीवनसाथी को कोई सुरक्षा नहीं मिली। सबसे बड़ी समस्या यह रही कि मेडिकल महंगाई 12-15 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है, जबकि ज्यादातर बुजुर्गों को सिर्फ 7-8 फीसदी रिटर्न मिल रहा है। ऑनलाइन ठगी का खतरा बताया। उदाहरण के तौर पर पुणे के एक रिटायर्ड बैंक मैनेजर ने गारंटीड रिटर्न का लालच देकर चलाए जा रहे ऑनलाइन स्कैम में पूरा 2.2 करोड़ रुपये गंवा दिए।

ये जरूरी बदलाव आपको 2026 के लिए क्या करनी है तैयारी

- आर्थिक विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अब धीरे-धीरे ऐसा पोर्टफोलियो बनाएं। इसमें नियमित आय भी आए और थोड़ी ग्रोथ भी रहे। मिड और स्मॉल कैप में ज्यादा निवेश कम करें, डेट हिस्से को मजबूत बनाएं और 3 से 5 साल की जरूरत के लिए लिक्विडिटी अलग रखें।
- एससीएसएस, ईपीएफ, शॉर्ट से मीडियम टर्म डेट फंड्स, रीट्स/इनविट्स, लैडर्ड फिक्स्ड डिपॉजिट और थोड़ा सा इक्विटी हिस्सा मिलाकर चलें। साथ ही 6 से 12 महीने का आपातकालीन फंड जरूर रखें।

अनुमानः ब्याज दरें नीचें आएंगी

- विशेषज्ञों की लोगों को सलाह कि वे लंबे समय के ब्याज दरें नीचे आएंगी, इसलिए अभी जो अच्छे स्थिर रिटर्न मिल रहे हैं, उन्हें लॉक कर लेना चाहिए। अनुमान है कि 2026 में बैंक एफडी पर 5.5 से 7.5 फीसदी और जी-सेक पर 6 से 6.5 फीसदी तक मिल सकता है। अगर ब्याज दरें गिरेंगी तो एन्युटी की पेआउट भी कम हो सकती है।
- 2024-25 में कई बड़े नियम बदले। यूनिफाइड पेंशन स्कीम शुरू हुई, एनपीएस वात्सल्य लॉन्च हुआ, एनपीएस/यूपीएस/एपीवाई के चार्जेस बदले गए और इंश्योरेंस टैक्स व जीएसटी में भी बदलाव आए। 2026 की प्लानिंग करते समय इन सब पर नजर रखनी जरूरी है।

सावधानी नहीं बरती तो बिगड़ जाएगा फाइनेंस का पूरा गणित

जवानी के दिनों में लिए गए फाइनेंशियल फैसले ही तय करते हैं बुढ़ापे की जिंदगी

लापरवाही बरती तो बुढ़ापे में इसका खामियाजा भुगतना होगा

बिजनेस डेस्क

जवानी के दिनों में लिए गए फाइनेंशियल फैसले ही बुढ़ापे की जिंदगी तय करते हैं। अगर आपने इस उम्र में गलत डिसीजन लिए या लापरवाही बरती तो बुढ़ापे पर आपको इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे 5 ऐसी गलतियों के बारे में जो आपके बुढ़ापे पर फाइनेंस का पूरा गणित बिगाड़ सकती हैं और आपको भारी आर्थिक परेशानियों का समना करना पड़ सकता है। जवानी में करियर, मस्ती और लाइफस्टाइल पर पूरा फोकस रहता है। इसी भागदौड़ में कई ऐसे फैसले टलते रहते हैं, जो बुढ़ापे को सिक्योर बनाने के लिए बेहद जरूरी होते हैं। उस वक्त लगता है कि अभी बहुत समय है, बाद में देख लेंगे. लेकिन जब उम्र बढ़ती है और जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, तब उन गलतियों को सुधारने की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है।

निवेश में देरी

सबसे बड़ी और सबसे आम गलती है समय रहते निवेश शुरू न करना। कई लोग निवेश को खर्च समझ लेते हैं और सोचते हैं कि जब सैलरी बढ़ेगी तब निवेश करेंगे। कुछ लोग 20 साल और 30 साल की उम्र मौज-मस्ती में निकाल देते हैं, जबकि हकीकत यह है कि निवेश कोई खर्च नहीं, बल्कि आपके भविष्य की सुरक्षा है। छोटी रकम से भी निवेश शुरू किया जा सकता है, जितनी जल्दी निवेश शुरू करेंगे, उतना ज्यादा समय कंपाउंडिंग को मिलेगा और उतना बड़ा फंड तैयार होगा। देर करने पर बुढ़ापे में फंड की कमी साफ महसूस होती है। इसलिए हमेशा निवेश जल्द शुरू कर देना चाहिए, ताकि बाद में पछताना ना पड़े और समय रहते आपके पास अच्छा खासा फंड एकत्र हो सके।

निवेश कोई खर्च नहीं, बल्कि आपके भविष्य की सुरक्षा

घर नहीं सोचा तो बुढ़ापे में परेशानी

आज भी बहुत से लोग किराए के घर में रहते हुए सोचते रहते हैं कि कभी तो अपना घर लेंगे। लेकिन सही समय पर प्लानिंग न करने की वजह से ये सपना अधूरा रह जाता है। जवानी में होम लोन लेना आसान होता है, ईएमआई चुकाने के लिए लंबा समय मिलता है और इनकम बढ़ने की संभावना भी रहती है। 40 साल की उम्र के बाद ये फैसला मुश्किल हो जाता है। जो लोग समय रहते घर की प्लानिंग नहीं करते, वो बुढ़ापे में सबसे ज्यादा पछताते हैं। इसलिए आप अपना बुढ़ापा शान से गुजारना चाहते हैं तो 40 साल की उम्र होने से पहले ही अपने लिए एक मकान जरूर बना लें। इससे आपको बुढ़ापे में परेशानी नहीं झेलनी पड़ेगी।

लाइफस्टाइल के चक्कर में कर्ज का जाल

जरूरत और शौक के फर्क को न समझना भी एक बड़ी गलती है। कई युवा लग्जरी लाइफ जीने के लिए क्रेडिट कार्ड और पर्सनल लोन पर जरूरत से ज्यादा निर्भर हो जाते हैं। लंबे समय तक कर्ज चुकाने से सेविंग नहीं बन पाती। नतीजा यह होता है कि बुढ़ापे तक भी ईएमआई पीछा नहीं छोड़ती। लोन उतना ही लें, जितना आपकी इनकम और सेविंग्स आराम से संभाल सकें। लाइफस्टाइल के चक्कर में कर्ज का जाल एक बड़ा खतरा है, जिससे हमें बचना होगा। हमें अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी, बजट बनाना, कर्ज लेने से पहले सोचना और कर्ज को जल्दी चुकाने की कोशिश करनी होगी। तभी हम कर्ज के जाल से बच सकते हैं।

इंश्योरेंस से दूरी

कई लोग सोचते हैं कि इंश्योरेंस की अभी क्या जरूरत है, लेकिन यही सोच आगे चलकर भारी पड़ती है। कम उम्र में टर्म और हेल्थ इंश्योरेंस लेने पर प्रीमियम कम होता है और कवर ज्यादा मिलता है। यह मुश्किल समय में आपके और आपके परिवार के लिए मजबूत सुरक्षा कवच बनता है। हेल्थ खर्च और अनहोनी से बचाव के लिए इंश्योरेंस को नजरअंदाज करना बड़ी भूल है। समय रहते इंश्योरेंस कवर ले लेना चाहिए, ताकि आपात स्थिति में मुंह न ताकना पड़े।

रिटायरमेंट प्लानिंग टालना

बच्चे संभाल लेंगे या अभी तो बहुत टाइम है जैसी सोच सबसे खतरनाक होती है। जल्दी रिटायरमेंट प्लानिंग शुरू करेंगे, उतना ही मजबूत फंड तैयार होगा।

खबर संक्षेप

पूर्व सरपंच के भाई पर फायरिंग

सिरसा। नाथूसरी चौपटा क्षेत्र के गांव कैरांवाली में देर राज पूर्व सरपंच के भाई पर फायरिंग कर दी गई, जिसमें पूर्व सरपंच का भाई बाल-बाल बच गया। पुलिस को दी शिकायत में गांव कैरांवाली के पूर्व सरपंच रमेश कुमार के भाई सुरेश कुमार बताया कि बीती रात करीब साढ़े 12 बजे तीन व्यक्ति एक ब्लैक रंग की गाड़ी में सवार उनके घर पहुंचे। रात में गाड़ी आने और दरवाजा खटखटाने की आवाजें सुनी तो परिवार के सदस्य उठ गए। सुरेश कुमार ने दरवाजा खोला, तो आदमपुर का राजकुमार ने उनसे गांव माखोसरानी का रास्ता पूछा। सुरेश कुमार ने बताया कि बातचीत के दौरान अचानक राजकुमार ने पिस्तौल निकालकर गोली चला दी।

कंपनी ने जरूरतमंदों को सर्दी में बांटे कंबल

सिरसा। बढ़ती कड़ाके की ठंड को देखते हुए मैनकाइंड फार्मा ने अपने सामाजिक सरोकार के तहत सैकड़ों जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए। ढाणी दर्शन सिंह स्कूल के हैडमास्टर गुरप्रीत सिंह ने बताया कि मेनकांइड फार्मा कंपनी हर वर्ष की भांति इस बार भी सैकड़ों असहाय और गरीब परिवारों को ठंड से राहत दिलाने के लिए कंबल वितरित करती है। प्रबंध निदेशक ने कहा कि मानवता की सेवा सबसे बड़ी सेवा है। अगर परमात्मा ने हमें इस लायक बनाया है कि हम किसी की मदद कर पाएं तो बिना निःस्वार्थ सेवा करें। समारोह के दौरान अतिथियों ने कंपनी के इस मानवीय प्रयास की सराहना की।

दुर्गा मंदिर के दानपात्र से चोरी का आरोपी काबू

फतेहाबाद। गांव चिम्मो के दुर्गा मंदिर के दानपात्र से चोरी करने के मामले में थाना सदर रतिया पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। थाना सदर रतिया प्रभारी निरीक्षक बिजेन्द्र ने बताया कि राजकुमार पुत्र जसपाल राम निवासी गांव चिम्मो द्वारा दी गई शिकायत के अनुसार 19 दिसंबर को समय करीब 3:30 बजे एक युवक को मंदिर के दानपात्र से चोरी कर भागते हुए देखा गया। शिकायतकर्ता द्वारा मौके पर वापस आकर देखने पर दानपात्र का ताला टूटा हुआ पाया गया तथा दानपात्र में रखी 4530 की राशि चोरी हो चुकी थी। शिकायत के आधार पर थाना सदर रतिया में मामला दर्ज कर तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी संजय कुमार पुत्र सतपाल निवासी रूपांवाली को गिरफ्तार कर लिया गया है।

पब्लिक टॉयलेट निर्माण की रखी नींव

सिरसा। नगर परिषद चेयरमैन वीर शांति स्वरूप ने वार्ड नंबर 3 में पब्लिक टॉयलेट निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नगर पार्षद रमेश मेहता, हरमिंदर मरार, वीरेंद्र सिंह टिन्ना, सोहन लाल, बलवंत कुंडू एवं राजकुमार मौजूद थे। चेयरमैन ने कहा कि पब्लिक टॉयलेट का निर्माण विशेष रूप से महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों एवं राहगीरों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। चूंकि यह स्थल बस स्टॉप के नजदीक स्थित है, इसलिए यहां से गुजरने वाले यात्रियों एवं आम नागरिकों को भी इसका सीधा लाभ मिलेगा। इससे न केवल स्वच्छता को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि शहर की सुंदरता एवं नागरिकों के स्वास्थ्य स्तर में भी सकारात्मक सुधार आएगा।

राधाकृष्ण मंदिर में 'नानी बाई रो मायरो' कल से

सिरसा। पुलिस लाइन स्थित श्री राधा-कृष्ण मंदिर में नरसी भात की प्रसिद्ध कथा नानी बाई रो मायरो का भव्य आयोजन आगामी 22 से 25 दिसंबर तक किया जाएगा। मंदिर के पुजारी पंडित कमल शर्मा ने बताया कि कथा वाचिका देवी सुनीता बाईसा तीन दिन यह कथा सुनाएंगी। उन्होंने कहा कि नरसी भात की कथा भक्त नरसी मेहता की उस अटूट श्रद्धा की अमर गाथा है, जहां समाज की उपेक्षा के बीच स्वयं भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्त की लाज बचाने पहुंच जाते हैं। नानी बाई के मायरे के अवसर पर जब कोई सहारा नहीं मिलता, तब प्रभु स्वयं भात लेकर उपस्थित होते हैं। उन्होंने बताया कि मंदिर में हर वर्ष ऊं नमः शिवाय के सवा करोड़ मंत्रों का जाप सावन मास में किया जाता है।

टोहाना में डोर-टू-डोर सर्वे कर नशा पीड़ितों की पहचान करेगी नशा मुक्ति टीम

ऑपरेशन जीवन ज्योति : नशा मुक्त समाज की दिशा में कदम, टीम गठित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ टोहाना

टोहाना। युवाओं को जागरूक करते नशामुक्ति टीम। फोटो : हरिभूमि

नशा मुक्त समाज के निर्माण की दिशा में चलाए जा रहे ऑपरेशन जीवन ज्योति को और अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के निर्देशानुसार टोहाना मंडल में एक नई नशा मुक्ति टीम का गठन किया गया है। इस टीम की कमान उप निरीक्षक सज्जन कुमार को सौंपी गई है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य नशे की गिरफ्त में आए युवाओं की पहचान कर उन्हें उचित उपचार, काउंसिलिंग एवं मार्गदर्शन के माध्यम से पुनः समाज की मुख्यधारा से जोड़ना है।

एसपी के मार्गदर्शन में गठित नशा मुक्ति टीम ने टोहाना उपमंडल स्तर पर कार्य प्रारंभ कर दिया है। टीम द्वारा शहर के संवेदनशील वार्डों में डोर-टू-डोर सर्वे कर नशा पीड़ितों की पहचान एवं उनके उपचार की प्रक्रिया को धरातल पर उतारा जा रहा है। टोहाना में गठित नशा मुक्ति टीम द्वारा वार्ड नंबर 1 एवं 2 में पिछले दो दिनों से डोर-टू-डोर सर्वे किया जा रहा है, जिसके दौरान तीन दर्जन से अधिक नशा पीड़ितों की पहचान की गई है। टीम द्वारा पीड़ितों की पृष्ठभूमि की जानकारी लेकर उनकी काउंसिलिंग की गई तथा उन्हें नशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया गया।

वार्ड नंबर 1 एवं 2 से 8 नशा पीड़ित स्वयं आगे आकर उपचार के लिए सहमत हुए, जिनका नागरिक अस्पताल, टोहाना में उपचार प्रारंभ करवा दिया गया है। चिकित्सकों की टीम द्वारा आवश्यक ब्लड सैंपल जांच के उपरांत उनका इलाज शुरू किया गया है। टीम प्रभारी उपनिरीक्षक सज्जन कुमार ने बताया कि पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार टोहाना के सभी वार्डों में चरणबद्ध रूप से डोर-टू-डोर सर्वे कर नशा पीड़ितों की पहचान एवं उपचार सुनिश्चित किया जाएगा, ताकि टोहाना मंडल में नशे की मांग को जड़ से समाप्त किया जा सके। टोहाना मंडल में अलग से नशा मुक्ति टीम के गठन पर शहर के व्यापारी वर्ग एवं जनप्रतिनिधियों ने पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि नशे का बढ़ता प्रचलन अपराधों की जड़ है और टोहाना को नशा एवं अपराध मुक्त बनाने की दिशा में पुलिस अधीक्षक द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय और सार्थक सिद्ध हो रहे हैं।

भुना पुलिस का नशे के खिलाफ अभियान

जैक व रैम्बो टीम के साथ चलाया सर्च ऑपरेशन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

जिला पुलिस द्वारा नशे की रोकथाम एवं अपराध नियंत्रण को लेकर चलाए जा रहे अभियान के तहत भूना पुलिस ने शनिवार को क्षेत्र के गांव डुल्ट में नशे के विरुद्ध विशेष सर्च अभियान चलाया। थाना भुना प्रभारी उप निरीक्षक ओमप्रकाश के नेतृत्व में डॉग स्क्वॉड जैक व रैम्बो टीम के साथ गठित विशेष पुलिस टीम ने गांव डुल्ट के नशा प्रभावित व संवेदनशील क्षेत्रों में पैदल गश्त एवं सघन तलाशी ली। टीम ने आंतरिक गलियों, मुख्य मार्गों, सार्वजनिक स्थलों एवं संदिग्ध पॉकेट्स पर विशेष फोकस रखते हुए संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान सत्यापित की। अभियान के दौरान पुलिस टीम ने वाहनों की गहन जांच की तथा बिना नंबर प्लेट व संदिग्ध परिस्थितियों में खड़े दोपहिया वाहनों की भी पड़ताल की गई। साथ ही पुलिस द्वारा मौके पर मौजूद युवाओं व ग्रामीणों से संवाद स्थापित कर उन्हें नशे के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक किया गया तथा नशे से दूर रहने की सख्त हिदायत दी गई। उप निरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि ऑपरेशन हॉटस्पॉट डॉमिनेशन के तहत यह सर्च अभियान नशे की गतिविधियों पर अंकुश लगाने और असामाजिक तत्वों में भय पैदा करने के उद्देश्य से चलाया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि थाना भुना क्षेत्र में ऐसे अभियान आगे भी नियमित रूप से जारी रहेंगे।

न्यूज डायरी

राजकीय स्कूल भरोखां में लगाई गणित प्रदर्शनी

सिरसा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भरोखां में शनिवार को प्रधानाचार्य वेद रोज की अध्यक्षता में गणित दिवस के उपलक्ष्य में गणित प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए मॉडल गणित पार्क, कोण के प्रकार, वृत्त के गुण, गणित के सूत्र, त्रिविमीय आकृति आदि प्रदर्शित किए गए। इस प्रदर्शनी में स्कूल के 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा के 60 विद्यार्थियों ने 34 मॉडल बनाए गए। अतिथियों ने विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई आकृतियों की सराहना की तथा इस प्रयास के लिए स्कूल स्टाफ की प्रसंशा की। प्रधानाचार्य वेद रोज ने कहा कि गणित विषय की वर्तमान में बहुत उपयोगिता है क्योंकि प्रतियोगी परीक्षाओं में गणित की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। इस प्रदर्शनी को आयोजित करने में गणित प्रवक्ता अनिशा मेहता, हसला प्रधान कुलदीप सिहाग, अंकु, संतोष, डॉ. देव कंबोज डीपीई, दलजीत कौर भंगू, दीपक कुमारी, सीमा कंबोज, शर्मिला कंबोज, सुषमा कंबोज, मनजिंद्र कंबोज, अनीता कंबोज, डॉ. सुशीला, राजविंद्र चहल, प्रवीन कुमार, जितेंद्र गिरी, रितु माहोर, ज्योतिप्रीत, सुमन असीजा, अमित कुमार, सोहन लाल, हनुमान शर्मा, उदयपाल आदि अन्य अध्यापक साथियो की विशेष भूमिका निभाई।

जसवंत राय इंसां बने शरीरदानी एवं नेत्रदानी

फतेहाबाद। मॉडल टाऊन स्थित अरोड़ा वैष्णो भोजनालय के संचालक एवं गुरुनानकपुरा, गीता मंदिर रोड निवासी जसवंत राय भठेजा के परिजनों ने उनकी अंतिम इच्छानुसार मानवता भलाई के लिए शरीरदान व नेत्रदान किया है। अरोड़ा परिवार के इस महान निर्णय से समाज में मानवता और सेवा की एक प्रेरणादायक मिसाल कायम हुई है। जसवंत राय भठेजा के पुत्र बंटी अरोड़ा एवं रविंदर अरोड़ा ने बताया कि वह डेरा प्रमुख संत गुरमीत राम रहीम सिंह इन्सां द्वारा दी जा रही पावन शिक्षाओं से प्रेरित होकर अपने पिता जसवंत राय का देहदान करने का निर्णय ले सके। इसके साथ ही उनकी आंखों का भी दान किया गया, जिससे दो जरूरतमंदों की अंधेरी जिंदगियों में रोशनी आएगी। डेरा सच्चा सौदा की 'बेटा-बेटी एक समान' मुहिम को साकार करते हुए जसवंत राय इंसां भठेजा की बेटियों गीता, ऊषा, मंजू, पुत्रवधुओं रीमा, रिम्पी, पौत्रियों प्रीत व एश्वी ने अर्थी को कंधा देकर समाज के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

मनरेगा एक्ट बहाल करने को लेकर सौंपा ज्ञापन

सिरसा। मनरेगा एक्ट को बहाल करने की मांग को लेकर शनिवार को ऑल इंडिया मनरेगा मजदूर यूनियन की ओर से सिरसा के अतिरिक्त उपायुक्त वीरेंद्र सहरावत को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा गया। यूनियन नेता रमेश वेदवाला, जयवीर चाडीवाल, बलराम झोरडनाली, रामपाल केलनिया, राजू मीरपुर, छिंद्र पनिहारी, छबीलदास बाजेकां, बलविंद्र खैरेकां, ओमप्रकाश पटीर सहित अन्य सदस्यगण ने बताया कि मनरेगा एक्ट को खत्म करने व मनरेगा मजदूरों के हित के खिलाफ संसद में नया एकट लेकर आई है, जोकि किसी सूरत में बर्दाश्त नहीं है। ज्ञापन के जरिये मांग की गई है कि सभी मनरेगा मजदूरों को वर्ष में कम से कम दो सौ दिन का रोजगार दिया जाए। मनरेगा मजदूरों की दिहाड़ी 400 रुपये से बढ़ाकर 500 रुपये की जाए तथा मनरेगा मेट को 750 रुपये दैनिक दिहाड़ी दी जाए। मनरेगा मजूदरों को काम उपलब्ध न करवाने के बदले में बेरोजगारी भत्ता दिया जाए। सडकें व नहरों के दोनों और साथ लगती हुई वन विभाग की जमीन पर पौधा रोपण का कार्य मनरेगा मजदूरों से करवाया जाए। सभी मनरेगा मजदूरों को लगातार काम देने के लिए ग्राम पंचायत की कृषि भूमि पर किन्नु, एपल बेरी, अमरूद, आंवला/बेलगीरी, आम, जामुन आदि के बाग लगवा कर मनरेगा मजदूरों को काम के अवसर प्रदान किए जाएं।

प्रदेश में कानून व्यवस्था का दिवाला पिटा: गुप्ता

सिरसा। आम आदमी पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष डा. सुशील गुप्ता ने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था तार-तार हो चुकी है। डबवाली में मासूम बच्ची की अपहरण के बाद हत्या कर दी जाती है, जोकि सरकार व सिस्टम पर सवालिया निशान लगाती है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का नारा देने वाली सरकार में आज महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। छोटी-छोटी बच्चियां घर से निकलने से डरती हैं। रोजाना प्रदेश में फिरौती, गैंगवार, हत्या सहित संगीप अपराध हो रहे हैं, लेकिन सरकार इन सब के बावजूद हाथ पर हाथ धरे तमाशा देख रही है। डॉ. गुप्ता शनिवार को सिरसा में पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठक के बाद मीडिया से बातचीत कर रहे थे। डा. गुप्ता ने कहा कि चिट्टा प्रदेश के सभी जिलों में पैर पसार चुका है। नशे के आदी युवक लगातार आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं, जिसका मुख्य कारण है बेरोजगारी। बेरोजगार के कारण युवा मानसिक तनाव में हैं और बेरोजगारी के कारण ही युवक संपत्तियां बेचकर डंकी रास्ते से विदेश में जाने को मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं के संरक्षण में प्रदेश में कई फिरौती गैंग पनप चुके हैं। डा. गुप्ता ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार पंजाब में बिना भेदभाव के सरकारी नौकरियां दे रही है। यही नहीं सरकार द्वारा अभियान चलाकर न नशे पर रोक लगाकर बड़े-बड़े मगरमच्छ तस्करों को जेल में डालने का काम किया है।

छात्राध्यापकों का शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम संपन्न

- चार छात्राध्यापकों को किया पुरस्कृत

सिरसा। नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन के प्रथम वर्ष के छात्राध्यापकों का शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम का शनिवार को समापन हुआ। शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम शहर के विभिन्न विद्यालयों जीआरजी गर्ल्स सी सेकेंडरी स्कूल, गर्वनमेंट सी. सेकेंडरी स्कूल महावीर दल, जय भारत हाई स्कूल, आरकेपी नहेरू पार्क सी. सेकेंडरी स्कूल, जय श्री हाई स्कूल, गर्वनमेंट गर्ल्स सी. सेकेंडरी मेला ग्राउंड तथा गर्वनमेंट गर्ल्स मिडल स्कूल पुलिस लाईन में आयोजित किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने बीते बाइस दिनों के दौरान शिक्षण अभ्यास को गहनता से सीखा और शिक्षण के वास्तविक अनुभव ग्रहण किए। छात्राध्यापकों ने महाविद्यालय के प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार गतिविधियों का आयोजन किया। इनमें जागरूकता कार्यक्रम, पौधारोपण, इच वन टीच वन, क्षेत्रीय भ्रमण, क्रियात्मक अनुसंधान, केस स्टडी आदि विभिन्न गतिविधियों में अपनी सहभागिता दिखाई। शिक्षण अभ्यास के दौरान छात्राध्यापकों द्वारा पूरी की गई गतिविधियों के आधार पर प्रत्येक विद्यालय में चार छात्राध्यापकों को बेस्ट टीचिंग परफोरमेंस, बेस्ट टीचिंग एड, बेस्ट चॉक बोर्ड राइटिंग और बेस्ट टीचिंग फाइल के लिए पुरस्कृत किया गया, जिसमें छात्राध्यापकों को प्रमाण पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

राजेंद्रा इंस्टिट्यूट में दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते हुए।

राजेंद्रा इंस्टिट्यूट में आयोजित दो दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव शनिवार को संपन्न हो गया। प्रतियोगिता के अंतिम दिन कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्जवलन समारोह से हुई। प्रतियोगिता में भाग ले रहे खिलाडियों को संबोधित करते हुए डॉ. अशोक गुप्ता ने कहा कि खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मानसिक संतुलन, आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच को भी मजबूत करते हैं। प्रतियोगिता के अंतिम दिन विभिन्न खेल मुकाबले हुए जो अत्यंत रोचक रहे।

खेल मुकाबलों में फार्मेसी कॉलेज की श्रेणी में लडक़ों के वर्ग में हुए शतरंज में प्रथम स्थान नितिन ने हासिल किया जबकि वंश द्वितीय स्थान पर रहे। इसी प्रकार लड़कियों के वर्ग में तमन्ना व हर्षिता क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

संस्थान के चेयरमैन एन.के. गुप्ता, सचिव पुलकित गुप्ता, कॉलेज ऑफ फार्मेसी के प्राचार्य डॉ. संजीव कालरा, संस्थान की काउंसलर एकता कालरा, नर्सिंग प्राचार्या कुलविंद्र कौर, डॉ. राम, कुलवंत सिंह, परवरिश कंबोज, धीरज कंबोज आदि मौजूद थे।

शूरसैनी महाराज न्याय और वीरता के प्रतीक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

- सिरसा में शूरसैनी महाराज की जयंती श्रद्धा और उत्साह से मनाई गई

सैनी सभा ट्रस्ट की ओर से सैनी धर्मशाला में शूरसैनी महाराज की जयंती पर कार्यक्रम आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ट्रस्ट के प्रधान नरेंद्र सैनी, संरक्षक विजयपाल सैनी व कोषाध्यक्ष विजय सैनी ने संयुक्त रूप से की। मुख्यातिथि के रूप में महेंद्र कुमार रिटायर्ड प्रिंसीपल, विशिष्ठ के रूप में अतिथि बाबा सरसाईनाथ बुक बैंक के चेयरमैन गुरदीप सैनी व राजकुमार सैनी ने शिरकत की। आमंत्रित अतिथियों में डॉ. भारती सैनी, रामकुमार रिटायर्ड डीएसपी, नगर पार्षद विक्रम सैनी व गोपीराम सैनी, अनिल कुमार सैनी, कुलदीप कुमार सैनी, भागीरथ सैनी, रविंद्र सैनी, अश्वनी सैनी, प्रदीप सैनी, मंजीत सैनी शामिल रहे।

कोषाध्यक्ष विजय सैनी ने बताया कि सर्वप्रथम हवन यज्ञ आयोजित किया गया, जिसमें सभी उपस्थित महानुभावों ने आहुति डाली। इसके बाद माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। तत्पश्चात गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें महेंद्र सैनी व गुरदीप सैनी ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर वक्ताओं ने महाराजा शूरसैनी के जीवन और उनके द्वारा समाज के उत्थान के लिए किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि ने कहा कि महाराजा शूरसैनी न केवल सैनी समाज के गौरव हैं, बल्कि वे न्याय, वीरता और धर्मपरायणता के प्रतीक थे। उनका जीवन हमें सामाजिक समरसता और राष्ट्र सेवा की प्रेरणा देता है। वक्ताओं ने शिक्षा प्रसार, नशा मुक्ति में सहयोग की भावना पर जोर दिया। कार्यक्रम के आयोजकों ने उपस्थित जनसमूह का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजनों का मुख्य उद्देश्य युवा पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास से अवगत कराना और समाज में एकता की भावना को मजबूत करना है। समारोह के अंत में भंडारे का आयोजन किया गया।

लायंस क्लब का नेत्र ऑपरेशन कैम्प आज

रतिया। लायंस क्लब रतिया टाउन द्वारा आंखों का मुफ्त ऑपरेशन कैम्प रविवार 21 दिसम्बर को जैन समाधि, बुढ़लाडा रोड पर लगाया जाएगा। क्लब सचिव शिव सोनी ने बताया कि यह कैम्प जिंदल परिवार के सहयोग से स्वर्गीय सेठ मेघ राज जिंदल की स्मृति में आयोजित किया जा रहा है। कैम्प के मुख्य अतिथि लायंस इंटरनेशनल के जनपद 321 ए 3 के जनपद अध्यक्ष विशाल वढ़ेरा, पूर्व जनपद अध्यक्ष हरदीप सरकारिया, उप जनपद अध्यक्ष संजय गांधी, महेश बंसल व नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. राहुल सिंगला विशिष्ट अतिथि होंगे।

जूस पिलाकर किसान को अनशन से उठाया

ओढां। गांव ओढ़ां से नुहियांवाली जाने वाले रास्ते पर 5 दिनों से आमरण अनशन पर बैठे किसान को अमन कुमार मित्तल खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी ओढ़ा और थाना प्रभारी आनंद बैनीवाल ने जूस पिलाकर घर भेज दिया। दोनों अधिकारियों ने शनिवार को किसान के खेत में जाकर उसकी समस्या को सुना और उसके किन्नु के बाग की पानी से धुलाई करवा दी। उन्होंने किसान सुभाष को आश्वासन दिया कि मार्केटिंग बोर्ड जब तक सडक़ के लिए भूमि अधिग्रहण करके पक्की नही बनवा देता तब तक इस मार्ग को अस्थाई तौर पर पक्का करके प्रतिदिन पानी का छिडक़ाव करेगा ताकि धूल मिट्टी से राहगीरों को परेशानी न हो।

लोकतंत्र में जिम्मेदार विपक्ष की जरूरत : यतींद्र

सिरसा। हरियाणा विधानसभा में कांग्रेस पार्टी द्वारा लाए गए तथाकथित अविश्वास प्रस्ताव के नोटिस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भाजपा सिरसा के जिलाध्यक्ष एडवोकेट यतींद्र सिंह ने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव का नोटिस देकर सदन से वॉकआउट कर जाना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि कांग्रेस आज न तो सदन में मजबूत स्थिति में है और न ही जनभावनाओं से जुड़ी हुई है। सच्चाई यह है कि कांग्रेस पार्टी स्वयं अपने आंतरिक द्वंद्व में उलझी हुई है और किसी भी विषय पर ठोस व स्पष्ट निर्णय लेने में असमर्थ दिखाई दे रही है। लोकतंत्र में एक जिम्मेदार, सकारात्मक और रचनात्मक विपक्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन कांग्रेस इस भूमिका में पूरी तरह विफल साबित हो रही है। यदि कांग्रेस ने अपना रवैया नहीं बदला, तो वह दिन दूर नहीं जब यह पार्टी अपनी प्रासंगिकता खोते-खोते सिंगल डिजिट तक सिमट कर रह जाएगी।

पूनम ने किया सीडीएलयू का नाम रोशन

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा की छात्रा व 3 हरियाणा गर्ल्स बटालियन एनसीसी, हिसार की कैडेट पूनम ने उत्तराखंड के उत्तरकाशी में आयोजित एनसीसी माउंटेनियरिंग कैंप में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विश्वविद्यालय एवं एनसीसी यूनिट का नाम रोशन किया है। यह कैंप बीती 2 दिसंबर से 15 दिसंबर तक आयोजित किया गया। कैंप नेहरु माउंटनेयरिंग अकादमी द्वारा आयोजित किया गया था जिसमें कुल 200 कैडेट्स ने भाग लिया व कैडेट पूनम 3 हरियाणा गर्ल्स बटालियन एनसीसी से भाग लेने वाली एकमात्र कैडेट रही। कैंप में कैडेट पूनम ने पूरी निष्ठा, अनुशासन और साहस के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया।

दहेज उत्पीड़न के अलग-अलग मामलों में दो आरोपी पति पकड़े

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद।

दहेज उत्पीडऩ के दो अलग-अलग मामलों में जिला पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थाना शहर टोहाना पुलिस ने दहेज उत्पीड़न, मारपीट व जान से मारने की धमकियों के मामले में आरोपी पति को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान सतनाम सिंह पुत्र बीर सिंह निवासी गांव असरपुर, जिला पटियाला के रूप में हुई है। थाना शहर टोहाना प्रभारी निरीक्षक कुलदीप सिंह ने बताया कि शिकायतकर्ता द्वारा दी गई शिकायत में आरोप लगाया गया कि उसका पति दहेज को लेकर नशे की हालत में उसके साथ मारपीट करता था तथा उसे लगातार प्रताड़ित करता था। शिकायत पर प्रारंभिक जांच के आधार पर थाना शहर टोहाना में मामला दर्ज कर आरोपी पति सतनाम सिंह को गिरफ्तार किया गया है।

दूसरा मामला

महिला थाना फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक अरूणा ने बताया कि शिकायतकर्ता द्वारा दी गई शिकायत में आरोप लगाया गया कि उसका पति सोनू पुत्र ओमप्रकाश निवासी कलौठा उसे दहेज को लेकर शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था तथा उसके साथ मारपीट करता था। शिकायत में ससुराल पक्ष के अन्य सदस्यों पर भी आरोप लगाए गए थे। इस पर पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।

जागरूकता | एसपी बोले, बिना जांच-पड़ताल विदेश न जाएं, किसी लालच में न फंसे

विदेश भेजने का झांसा देकर ठग रहे हैं जान और पैसा, फतेहाबाद पुलिस ने जारी की एडवाइजरी

- किसी भी अज्ञात एजेंट, दलाल या ऑनलाइन विज्ञापन पर आंख मूंदकर भरोसा न करें

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन ने आमजन से अपील की है कि वे विदेश में नौकरी दिलाने के नाम पर की जा रही ठगी से पूरी तरह सतर्क रहें। हाल के दिनों में इस तरह के मामलों में तेज़ी से वृद्धि हुई है, जिनमें भोले-भाले युवाओं को लुभावने ऑफर देकर न केवल आर्थिक रूप से ठगा जा रहा है, बल्कि कुछ मामलों में उन्हें जानलेवा परिस्थितियों में धकेल दिया गया है।

एसपी ने ने बताया कि हाल ही में रूस से सामने आए एक गंभीर मामले में भारतीय युवाओं को नौकरी के झांसे में लेकर अवैध रूप से युद्ध क्षेत्र में भेजा गया। यह घटना न केवल अंतरराष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन है, बल्कि इससे जुड़े परिवारों को गंभीर मानसिक, भावनात्मक और आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ा है।

इस चिंताजनक पृष्ठभूमि में फतेहाबाद पुलिस द्वारा एक जनहित एडवाइजरी जारी की गई है, जिसमें नागरिकों से कुछ आवश्यक सावधानियां बरतने का आग्रह किया गया है।

पुलिस ने कहा है कि किसी भी अज्ञात एजेंट, दलाल या ऑनलाइन विज्ञापन पर आंख मूंदकर भरोसा न करें। जिस भी एजेंसी से संपर्क किया जाए, उसकी प्रामाणिकता की जांच जरूर करें और यह सुनिश्चित करें कि वह भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से मान्यता प्राप्त हो।

जागरूक रहना और करना सामूहिक जिम्मेदारी

एसपी सिद्धांत जैन।

यदि कोई एजेंट बिना लिखित अनुबंध, वैध वीज़ा अथवा आवश्यक सरकारी अनुमति के विदेश भेजने की बात करता है, तो इसे स्पष्ट रूप से ठगी का संकेत मानें। विदेश जाने से पहले संबंधित देश के भारतीय दूतावास, कौंसलेट या विदेश मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट से सटीक और अद्यतन जानकारी अवश्य प्राप्त करें। त्वरित वीजा, अधिक वेतन या सीधे नौकरी के जैसे किसी भी प्रलोभन में आकर नकद या ऑनलाइन भुगतान न करें। किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या संस्था की जानकारी तुरंत नज़दीकी पुलिस थाना या राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन 1930 पर दें। एसपी ने कहा कि आज का युवा वर्ग रोजगार की तलाश में ऐसे ठगों का आसान शिकार बन रहा है। यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि न केवल स्वयं जागरूक बनें, बल्कि अपने परिवार, मित्रों और समाज को भी सजग करें। यदि हम समय रहते सतर्क हो जाएं, तो इस तरह की अंतरराष्ट्रीय ठगी की घटनाओं को रोका जा सकता है।

खबर संक्षेप

फतेहाबाद। पूर्व सीएम को श्रद्धासुमन अर्पित करते जजपा नेता।

जजपा ने पूर्व सीएम को दी श्रद्धांजलि

फतेहाबाद। जजपा ने जाट धर्मशाला स्थित जजपा कार्यालय में पूर्व मुख्यमंत्री स्व. ओमप्रकाश चौटाला की प्रथम पुण्यतिथि पर उनको श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। इस अवसर पर जजपा नेताओं ने कहा कि स्व. चौधरी ओमप्रकाश चौटाला लौहपुरूष थे। इस अवसर पर जजपा के राष्ट्रीय महासचिव कुलजीत कुलडिया, जिला अध्यक्ष रविंद्र बेनीवाल, महिला जिला अध्यक्ष संतोष माचरा सहित अन्य नेता मौजूद रहे।

गुडियाखेड़ा विद्यालय में हुई युवा ग्राम पंचायत

सिरसा। गांव गुडिया खेड़ा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में जिला स्तरीय युवा ग्राम पंचायत प्रतियोगिता का आयोजन की गई। यह प्रतियोगिता राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद गुरुग्राम के सौजन्य से डिंग डाइट के तत्वावधान में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम के आब्जर्वर प्रवक्ता जगदीश चंद्र बराच व निर्णायक मंडल में प्रवक्ता हेमराज व प्रवक्ता सुरेश शर्मा ने इस युवा ग्राम पंचायत का अवलोकन किया।

भाजपा मनाएगी अटल स्मृति वर्ष : जोड़ा

फतेहाबाद। भाजपा की ओर से पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी वर्ष को अटल स्मृति वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। इसके लिए बीजेपी जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने जिला संयोजक व सह संयोजकों की नियुक्ति की है। इनके नेतृत्व में आगामी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। जिलाध्यक्ष की ओर से हरियाणा सरकार में एग्रो इंडस्ट्रीज कॉर्पोरेशन के चेयरमैन भारत भूषण मिड्ढा को जिला संयोजक बनाया गया है।

फर्जी फैमिली आईडी मामले में महिला काबू

फतेहाबाद। फर्जी दस्तावेज तैयार कर बीपीएल राशन कार्ड और फैमिली आईडी में हेराफेरी करने के मामले में इकनोमिक सैल, फतेहाबाद ने तीसरी महिला आरोपी को गिरफ्तार किया है। महिला की पहचान सुखी पत्नी मि_ सिंह, निवासी मोहम्मदपुर सोतर, हाल लहरिया भुना के रूप में हुई। महिला को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

विद्यार्थियों ने चंद्रयान-5 का मॉडल बनाकर लूटी वाहवाही

आदर्श भारती इंटरनेशनल स्कूल में प्रदर्शनी: रंगला पंजाब भी छाया रहा

भूना। प्रदर्शन में भाग लेते आदर्श भारती स्कूल के विद्यार्थी तथा बच्चों को स्टेशनरी वितरित करते मुख्य अतिथि देवेन्द्र दहिया व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ भूना

आदर्श भारती इंटरनेशनल स्कूल में शनिवार को विभिन्न विषयों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में थाना भूना के थानाध्यक्ष ओम प्रकाश बिश्नोई ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। अध्यक्षता स्कूल के प्रबंध निदेशक सुभाष बिश्नोई और स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राजेश खिचड़ ने की, जबकि संचालन प्राचार्य कृष्ण कुमार धारनिया ने किया। प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने विषयगत मॉडलों के साथ भारतीय संस्कृति की समृद्ध झलक प्रस्तुत की। हरियाणा संस्कृति के अंतर्गत बाजरे की रोटी, बाजरे का धा, दही, जलेबी, हांसी के पेड़े, गुलगुले जैसे पारंपरिक व्यंजनों को प्रदर्शित किया गया। पंजाबी सभ्यता में रंगला पंजाब की झलक दिखी, जहां चरखा, कुंडी-सोटा, पकोड़े, दही भल्ले और खेती की आधुनिक तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। विद्यार्थियों ने भगवान श्री राम-लक्ष्मण-सीता, श्री कृष्ण-सुदामा जैसे महान पात्रों के परिधानों में प्रस्तुति देकर दर्शकों को आकर्षित किया। उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत में ताजमहल, श्री राम मंदिर और श्री कृष्ण मंदिर के मॉडल प्रदर्शित किए गए। वहीं 'म्हारो राजस्थान' प्रदर्शनी में बाजरे की रोटी, मक्खन, सरसों का साग, हलवा, खीर, रबड़ी, दलिया, बिलोना आदि के माध्यम से राजस्थान की संस्कृति को दर्शाया गया। विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने नवीन तकनीक का प्रयोग करते हुए चंद्रयान-5 का मॉडल तैयार किया और जेसीबी मशीन से भारी सामान उठाने की प्रक्रिया को सरल तरीके से समझाया। सामाजिक विज्ञान में प्रदूषण के कारकों पर आधारित मॉडल ने सभी को सोचने पर मजबूर किया। गणित प्रदर्शनी में आधुनिक शिक्षा को सरल बनाने के उपाय बताए गए, जबकि हिंदी, अंग्रेजी और पंजाबी विषयों में व्याकरण की विस्तृत जानकारी दी गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नन्हे बच्चों द्वारा राम-सीता झांकी, बरसाने का कान्हा नृत्य, हरियाणवी डांस, पंजाबी गिद्दा और राजस्थानी नृत्य ने दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम में अजय रेवड़ी, बलविंदर सिंह, हवा सिंह मंडा, विकास जाखल, साहिल मंडा, किनती कुमार, सतपाल सिंह, गोविंद कुमार अभिभावकों, आसपास के गणमान्य लोगों, सरपंचों और विभिन्न स्कूल संचालकों ने विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया।

फतेहाबाद। हिजरावां खुर्द विद्यालय में पौधरोपण करते अतिथिगण।

बचपन से शांति व एकजुटता का पाठ पढाया जाए

फतेहाबाद। गांव हिजरावां खुर्द स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय में अंतराष्ट्रीय मानव एकजुटता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में राजकीय प्राथमिक शिक्षक संघ हरियाणा के राज्य चेयरमैन देवेंद्र सिंह दहिया एवं विशिष्ट अतिथि ग्रामपंचायत सरपंच लक्ष्मणराम बाजीगर ने शिरकत की। समारोह की अध्यक्षता स्कूल मुखिया ललित मैहता द्वारा की गई। मुख्य अतिथि देवेन्द्र दहिया ने आज के दिन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विश्व शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय मानव एकजुटता बहुत ही आवश्यक है। जहां आज कुछ देश आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण युद्धों को जन्म देकर विश्व शांति के लिए खतरा बन रहे है वहीं हमारा देश प्राचीनकाल से शांति का अग्रदूत रहा है। 'सर्वे भवंतू सुखिनय' सूत्र की शिक्षा बचपन से ही प्राथमिक शिक्षा के साथ दी जानी चाहिए। इससे जहां आपसी भाईचारा मतबूत होगा वहीं देश की एकता का तानाबाना सुदृढ़ होगा। देवेन्द्र दहिया ने कहा कि 1988 को आज ही के दिन देश के युवाओं की शक्ति को मानते हुए मतदाता की आयु को 21वर्ष से घटाकर 18 वर्ष किया गया था इस अवसर पर अतिथियों द्वारा पौधारोपण भी किया गया। शिक्षिका सीमा ग्रोवर ने आज अपनी 21वर्ष की सेवापूर्ण व अंग्रेजी अध्यापक पद पर पदोन्नति होने पर सभी बच्चों को स्टेशनरी का वितरण किया। सरपंच लक्ष्मण बाजीगर ने कहा कि स्कूल प्रांगण में शीघ्र ही शैड व इंटरलॉक का कार्य करवाया जाएगा। इस अवसर पर अंजू रानी, सीमा ग्रोवर, रेनू ज्याणी, भावना, सुंदर सिंह, ममता, किरण, मदनलाल और आशा रानी आदि मौजूद रहे।

फतेहाबाद। बैठक में भाग लेते माकपा नेता। फोटो : हरिभूमि

मनरेगा बचाने के लिए माकपा का प्रदर्शन कल

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

- उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन कर विरोध जताएंगे

मनरेगा को बचाने के लिए माकपा द्वारा 22 दिसंबर को फतेहाबाद में उपायुक्त कार्यालय पर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। प्रदर्शन के माध्यम से मांग की जाएगी कि मनरेगा को सार्वभौम बनाकर और जरूरी फंड देकर इसे मजूबूत किया जाए ताकि कम से कम 200 दिनों का न्यूनतम रोजगार सुनिश्चित किया जा सके। पार्टी कार्यालय में आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए माकपा जिला सचिव जगतार सिंह, पूर्व सरपंच ने केंद्र सरकार द्वारा मनरेगा को खत्म करके वीबी-जी राम जी कानून बनाने के कदम को मजदूरों की रोजी रोटी पर सबसे बड़ा हमला बताया। माकपा नेता ने कहा कि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) को यूपीए सरकार द्वारा वामपंथी दलों के दबाव के कारण लागू किया गया था। मनरेगा एक सार्वभौमिक, मांग-आधारित कानून है जो काम का सीमित अधिकार प्रदान करता है। नया विधेयक इस स्वरूप को बदलता है और लोगों को यह सीमित अधिकार भी नहीं देता है। यह कानूनी तौर पर केंद्र सरकार को मांग के अनुसार फंड आवंटित करने की अपनी जिम्मेदारी से मुक्त करता है। उन्होंने कहा कि सरकार का 100 से 125 दिन तक गारंटीशुदा रोजगार बढ़ाने का दावा उसके जाने-माने जुमलों में एक और है। यह विधेयक जॉब कार्ड को तर्कसंगत बनाने के नाम पर ग्रामीण परिवारों के बड़े हिस्सों को बाहर कर देता है। खेती के चरम मौसम के दौरान 60 दिनों तक रोजगार का निलंबन ग्रामीण मजदूरों को तब काम से वंचित कर देगा जब उन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होगी और उन्हें जमींदारों पर निर्भर बना देगा।

डिजिटल हाजिरी का विरोध

माकपा नेता ने कहा कि अनिवार्य डिजिटल हाजिरी से मजदूरों को बहुत ज्यादा कठिनाइयां होती हैं, जिसमें काम का नुकसान और उनके अधिकारों से वंचित होना शामिल है। माकपा नेता ने कहा कि फंडिंग के पैटर्न में बदलाव का प्रस्ताव करके, केंद्र अपनी जिम्मेदारी राज्यों पर डाल रहा है। इससे राज्य सरकारों पर एक असहनीय वित्तीय बोझ पड़ता है। राज्यों से बेरोजगारी भत्ता और देरी के मुआवज का खर्च भी उठाने की उम्मीद की जाती है। इन सभी बदलावों का मकसद योजना की पहुंच को कम करना और केंद्र सरकार की जवाबदेही को कमजोर करना है।

रोटरी क्लब ऑफ फतेहाबाद चैंपियंस का चार्टर सेरेमनी समारोह संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

फतेहाबाद। रोटरी क्लब ऑफ फतेहाबाद चैंपियंस के चार्टर सेरेमनी समारोह में मौजूद सदस्य।

रोटरी क्लब ऑफ फतेहाबाद चैंपियंस की चार्टर सेरेमनी का आयोजन होटल ड्यूक, फतेहाबाद में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक तिलक, पुष्प वर्षा एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। समारोह में जिला गवर्नर भूपेश मेहता एवं फर्स्ट लेडी मधु मेहता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि पीडीजी गुलबहार सिंह रिटोल विशिष्ट अतिथि रहे। डिस्ट्रिक्ट गवर्नर का कॉलर सेरेमनी विकास करवासरा द्वारा संपन्न करवाई गई। चार्टर प्रस्तुति एवं शपथ ग्रहण समारोह के अंतर्गत नई टीम 2025-26 को पदभार सौंपा गया। क्लब की नई टीम में संस्थापक चेयरमैन जीना धुडिया, अध्यक्ष साक्षी अरोड़ा, सचिव किंज़ा मिढा, कोषाध्यक्ष कपिला मुंजाल एवं पब्लिक इमेज चेयरमैन मेघा बत्रा शामिल हैं। अध्यक्ष साक्षी अरोड़ा ने क्लब के भावी कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। जिला गवर्नर भूपेश मेहता ने रोटरी के सात फोकस एरिया पर आधारित संदेश देते हुए सदस्यों को समाज सेवा के लिए प्रेरित किया। सचिव किंज़ा मिढा ने अब तक किए गए प्रोजेक्ट्स की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

शिक्षण अभ्यास पूरा करके वापस कॉलेज लौटे एमएम बीएड कॉलेज के विद्यार्थी

- विद्यार्थियों ने कॉलेज के शिक्षकों के साथ अपने अनुभव साझा किए

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

फतेहाबाद। इंटर्नशिप पूरी करने के बाद बीएड कॉलेज के विद्यार्थियों को सम्मानित करते सरकारी स्कूल के स्टाफ सदस्य। फोटो : हरिभूमि

मनोहर मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन फतेहाबाद में बीएड प्रथम वर्ष के विद्यार्थी आज अपना 22 दिवसीय शिक्षण अभ्यास करके वापस कॉलेज लौट आए। इंटर्नशिप के दौरान इन विद्यार्थियों ने विभिन्न विद्यालयों में अध्यापन कार्य का अनुभव प्राप्त किया। कॉलेज लौटे इन विद्यार्थियों के चेहरे पर एक अलग ही आत्मविश्वास नजर आया। इन विद्यार्थियों का कॉलेज पहुंचने पर सभी स्टाफ सदस्यों ने स्वागत किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने भी शिक्षण अभ्यास के दौरान अपने अनुभवों को भी स्टाफ के साथ साझा किया। बता दें कि यह विद्यार्थी 21 नवंबर से 20 दिसंबर 2025 तक अपना 22 दिवसीय शिक्षण अभ्यास पूरा करने के लिए जिले के विभिन्न सरकारी स्कूलों में गए हुए थे। इसमें विद्यार्थी स्कूल में वास्तविक शिक्षण अनुभव प्राप्त करते है। सभी विद्यार्थी अपना शिक्षण अभ्यास पूरा करके काफी उत्साहित नजर आए। शिक्षण अभ्यास के इंचार्ज डॉक्टर नरेंद्र कुमार ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि शिक्षण अभ्यास में विद्यार्थियों को अध्यापन का वास्तविक अनुभव प्राप्त करवाया जाता है जिससे विद्यार्थी अपने अध्यापन कार्य में निपुण हो जाता है। इंटर्नशिप के दौरान इन विद्यार्थियों ने स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने, अनुशासन बनाए रखने व स्कूल की अन्य गतिविधियों का संचालन करना सीखा। इसी के साथ सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए महाविद्यालय में पुनः उनका स्वागत किया गया।

बाहरी राज्यों से आए युवकों के पुलिस ने दस्तावेज जांचे

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

रतिया। बाहर से आए युवकों की जांच करती पुलिस टीम।

जिला में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने एवं सुरक्षा की दृष्टि से चलाए जा रहे ऑपरेशन हॉट स्पॉट के अंतर्गत शनिवार को थाना शहर रतिया पुलिस ने एसएचओ पुष्पा सिहाग के नेतृत्व में रतिया क्षेत्र में विशेष जांच अभियान चलाया गया। इस अभियान के दौरान रतिया में बाहर से आए कश्मीरी युवकों का सत्यापन एवं दस्तावेजों की जांच की गई। जांच का उद्देश्य क्षेत्र में रह रहे बाहरी व्यक्तियों का विधिवत सत्यापन कर कानून व्यवस्था, शांति एवं नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना रहा। थाना प्रभारी पुष्पा सिहाग ने बताया कि यह कार्रवाई पूरी तरह रूटीन व एहतियाती कदम के रूप में की गई है, ताकि किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि पर समय रहते नजर रखी जा सके। जांच के दौरान सभी युवकों से शालीनता एवं नियमों के अनुरूप व्यवहार किया गया तथा आवश्यक दस्तावेजों की पुष्टि की गई। बता दें कि एसपी सिद्धांत जैन के निर्देशानुसार जिला पुलिस द्वारा ऐसे सुरक्षा एवं सत्यापन अभियान चलाए जा रहे हैं, जिससे आमजन में सुरक्षा की भावना मजबूत हो और असामाजिक तत्वों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके।

टीजीटी पद पर पदोन्नत सुभाष चन्द्र ने संभाला कार्यभार, शिक्षकों ने दी बधाई

भूना। ईमानदारी, अनुशासन और शिक्षा के प्रति समर्पण की पहचान रहे अध्यापक सुभाष चन्द्र ने पदोन्नति के उपरांत शनिवार को राजकीय कन्या पीएम श्री सीनियर सेकेंडरी स्कूल भूना में टीजीटी अध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। विद्यालय प्राचार्य तेजभान ने उन्हें विधिवत रूप से रिसीव करते हुए उपस्थिति रजिस्टर में हाजिरी दर्ज करवाई और जॉइनिंग प्रक्रिया पूरी कराई। इस अवसर पर शिक्षा विभाग से जुड़े कई वरिष्ठ अधिकारी व शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यभार ग्रहण के दौरान उपस्थित शिक्षकों ने सुभाष चन्द्र के अब तक के शैक्षणिक योगदान की सराहना की। इस मौके पर राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल भूना के प्राचार्य नरेश शर्मा, न्योली खुर्द के प्राचार्य राजपाल सांवरिया, मढ़ स्कूल के प्राचार्य अजीत सिंह, प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष योगेश्वर वर्मा, प्रवक्ता जियालाल बंसल, सुरेन्द्र दहिया, होशियार सिंह, राजकुमार सुथार सहित अन्य गणमान्य शिक्षकों ने सुभाष चन्द्र को नई जिम्मेदारी के लिए शुभकामनाएं दीं। उल्लेखनीय है कि सुभाष चन्द्र इससे पूर्व राजकीय मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूल भूना में करीब नौ वर्षों तक प्राइमरी शिक्षक के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने बैजलपुर और लहरिया गांव के राजकीय विद्यालयों में भी अध्यापन कार्य किया।

ट्रैफिक पुलिस ने भारी वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाए

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

रतिया। वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाते टे्रफिक पुलिस कर्मचारी।

जिला ट्रैफिक पुलिस द्वारा रतिया ने धुंध और कम दृश्यता वाले मौसम में सडक़ दुर्घटनाओं को रोकने के लिए विशेष अभियान चलाया गया। ट्रैफिक थाना प्रभारी उपनिरीक्षक जय सिंह ने बताया कि आज ट्रैफिक स्टाफ ने चौकी ब्राह्मणवाला पर वाहनों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए पीछे रिफ्लेक्टर लगाए। इससे धुंध और रात के समय वाहन चालकों को सडक़ पर मौजूद अन्य वाहनों का स्पष्ट दृश्य मिलेगा और संभावित दुर्घटनाओं की संभावना काफी हद तक कम होगी। उपनिरीक्षक जय सिंह ने आगे कहा कि ड्राइवरों को वाहन अपने लेन में चलाने, तेज गति से बचने और सुरक्षित दूरी बनाए रखने के लिए भी जागरूक किया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य न केवल सडक़ सुरक्षा बढ़ाना है, बल्कि समुदाय में जागरूकता फैलाना भी है। फतेहाबाद ट्रैफिक पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि वे धुंध या कम रोशनी वाले समय में वाहन चलाते समय अतिरिक्त सतर्कता बरतें, वाहनों में रिफ्लेक्टर की उपस्थिति सुनिश्चित करें और सडक़ नियमों का पालन करें। इस पहल के माध्यम से ट्रैफिक पुलिस ने सड़क सुरक्षा का पाठ पढ़ाया।

श्रद्धांजलि सर्वधर्म प्रार्थना सभा में कई वरिष्ठ नेताओं ने की शिरकत

इनेलो व जजपा ने पहली पुण्यतिथि पर पूर्व मुख्यमंत्री चौटाला को किया याद

- अभय चौटाला ने तेजाखेड़ा फार्म हाउस व अजय चौटाला ने सिरसा में किया याद

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

सिरसा। तेजाखेड़ा फार्म हाउस में ओपी चौटाला को श्रद्धांजलि देने पहुंचे सुखबीर बादल व अन्य तथा स्व. चौटाला की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते अजय चौटाला व अन्य। फोटो : हरिभूमि

इनेलो व जजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला की पहली पुण्यतिथि पर अलग-अलग जगहों पर कार्यक्रम कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इनेलो की ओर से तेजाखेड़ा फार्म हाउस स्थित पूर्व मुख्यमंत्री चौटाला को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए, जहां उनके भारी संख्या में समर्थक पहुंचे, जहां पार्टी सुप्रीमो अभय चौटाला के अलावा पंजाब के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुखबीर सिंह बादल, पूर्व वित्त मंत्री मनप्रीत बादल के अलावा पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं के अलावा समर्थकों ने उन्हें याद किया। उधर, सिरसा स्थित चौटाला हाउस में जजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय चौटाला व युवा प्रदेशाध्यक्ष दिग्विजय चौटाला ने समर्थकों के साथ पूर्व मुख्यमंत्री चौटाला को याद किया। पूर्व बिजली मंत्री रणजीत चौटाला भी बड़े भाई स्व. ओमप्रकाश चौटाला को चौटाला हाउस में आयोजित सर्वधर्म सभा में श्रद्धांजलि देने पहुंचे।

बादल ने किया याद

इनेलो की ओर से आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम सुखबीर सिंह बादल ने कहा कि स्व. ओमप्रकाश चौटाला ने ताउम्र गरीब, कमेरे, किसान, युवाओं सहित तमाम वर्गों के हितों के लिए श्रेष्ठ कार्य किया। जब-जब भी उन्होंने हरियाणा प्रदेश की कमान बतौर सेवक के रूप में संभाली, उन्होंने सदैव हरियाणा की प्रगति और प्रदेशवासियों के हितों से जुड़ी योजनाएं बनाकर उन्हें अमलीजामा पहनाया। उन्होंने कहा कि उनकी प्रथम पुण्यतिथि परउमड़ी भीड़ उनकी लोकप्रियता का पैमाना है। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला ने अपने पिता को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया।

किसानों व गरीबों के सच्चे हितैषी थे

उधर, जननायक जनता पार्टी की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री स्व. ओमप्रकाश चौटाला की प्रथम पुण्यतिथि पर सिरसा के चौटाला हाउस में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर जेजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय चौटाला ने कहा कि स्व. ओमप्रकाश चौटाला केवल एक सफल राजनेता ही नहीं थे, बल्कि बतौर पिता वे सदैव उनके मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत भी रहे। उन्होंने कहा कि पूर्व सीएम स्व. ओमप्रकाश ने अपना पूरा जीवन किसान, गरीब और हरियाणा के अंतिम व्यक्ति की सेवा में समर्पित कर दिया। उनके विचार, संघर्ष और सिद्धांत आज भी हरियाणा की राजनीति और समाज को दिशा दे रहे हैं। युवा जेजेपी के प्रदेशाध्यक्ष दिग्विजय चौटाला ने कहा कि स्वर्गीय ओमप्रकाश चौटाला का जीवन संघर्ष, अनुशासन और जनता के प्रति निष्ठा का प्रतीक रहा है।

वंदे मातरम, एसआईआर पर कांग्रेस का विरोध दुर्भाग्यपूर्ण

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

- विस में कांग्रेस की कार्यशैली पर सवाल उठाया

प्रवीण जोड़ा

भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने कांग्रेस पार्टी पर राष्ट्रीय प्रतीकों व महत्व के मुद्दों पर भयावह राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि विधानसभा में कांग्रेस द्वारा 'वंदे मातरम्' का विरोध करना न केवल देशहित के खिलाफ है बल्कि सभी देशभक्तों की भावनाओं का अपमान भी है। 'वंदे मातरम' हमारे देश का राष्ट्रीय गीत है, जिसने भारत को आजादी की दिशा में प्रेरित किया। संसद एवं अन्य सार्वजनिक जगहों पर इस गीत के खिलाफ जो विपक्षी रवैया दिखाया गया है, वह पूरी तरह अनुचित है और इससे राष्ट्रीय एकता पर प्रश्नचिह्न लगता है। बीजेपी नेता ने कहा कि संसद सत्र में एसआईआर के मुद्दे पर कांग्रेस का विरोध साफ-साफ दिखाता है कि विपक्ष महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर सामंजस्य और सकारात्मक भागीदारी की बजाए केवल असहमति का प्रदर्शन करना चाहता है। जोड़ा ने स्पष्ट किया कि देश के हित में सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदमों का विरोध करना कांग्रेस की राजनीतिक आदत बन गई है। प्रवीण जोड़ा ने कहा कि 'वीबी-जी रामजी' जैसे महत्वपूर्ण विधेयकों के विरोध ने यह सिद्ध कर दिया है कि कांग्रेस का लक्ष्य विकास नहीं बल्कि राजनीति करना है।

क्रिसमस स्पेशल

सदियों से मनाया जा रहा प्रभु यीशु के जन्मोत्सव को समर्पित क्रिसमस का पर्व, अब किसी एक क्षेत्र या वर्ग का नहीं ग्लोबल फेस्टिवल बन चुका है। वैश्विक प्रेरणाओं, मानवीय मूल्यों और व्यक्तिगत संवेदनाओं के संगम से आज का क्रिसमस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम सिर्फ उत्सव न मनाएं बल्कि उत्सव बन जाएं। यही इस दौर के क्रिसमस की सबसे बड़ी और सबसे सकारात्मक उपलब्धि है।

{ कवर स्टोरी / आर. सी. शर्मा }

खुशी-उल्लास-उमंग का ग्लोबल फेस्टिवल क्रिसमस

क्रिसमस एक ऐसा पर्व है जो एक समय तक धार्मिक उत्सव के रूप में मनाया जाता था, लेकिन आज इक्कीसवीं सदी में यह वैश्विक संवेदना, मानवीय एकजुटता और सामूहिक खुशी का प्रतीक बन चुका है। बदलती तकनीक, तेज रफ्तार जीवनशैली, वैश्वीकरण और सामाजिक विविधताओं के बीच भी क्रिसमस का रोमांच कम नहीं हुआ बल्कि कई अर्थों में और गहरा हुआ है।

परंपरा-आधुनिकता का संगम

आज के दौर में क्रिसमस सिर्फ चर्च की घंटियों, कैरोल्स गाने या क्रिसमस ट्री सजाने तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक ऐसा अवसर बन चुका है, जहां परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं। सोशल मीडिया पर फैली रोशनियां, डिजिटल ग्रीटिंग्स, वर्चुअल पार्टियां और ऑनलाइन गिफ्टिंग, इन सबने क्रिसमस को एक नए स्वरूप से सजा दिया है। जहां पहले क्रिसमस का अनुभव स्थानीय समुदाय तक सीमित रहता था, वहीं आज यह एक ग्लोबल इवेंट बन गया है। न्यूयॉर्क की सड़कों से लेकर टोक्यो, मुंबई और नैरोबी तक हर जगह क्रिसमस की सजावट, संगीत और उल्लास एक साझा भाव पैदा करता है।

खुशियों का नया एहसास

हाल के दशकों में क्रिसमस को लेकर हमारी भावनाओं में निश्चित ही बदलाव आया है। आधुनिक जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और अकेलापन बढ़ा है। ऐसे में क्रिसमस एक भावनात्मक विराम की तरह आता है, जहां लोग रुककर रिश्तों, यादों और मानवीय जुड़ाव को महत्व देते हैं। आज की खुशियां सिर्फ उपहारों तक सीमित नहीं रहीं। मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सुरक्षा और साथ होने की अनुभूति अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। क्रिसमस के समय परिवार या दोस्तों के साथ बैठकर खाना खाना, पुरानी यादें साझा करना या किसी जरूरतमंद की मदद करना, इन सबमें एक गहरी संतुष्टि छिपी है। यानी खुशी की मात्रा नहीं, लेकिन उसकी गुणवत्ता बदली है। यह अधिक संवेदनशील और अधिक मानवीय हुई है।

करुणा-साझेदारी की प्रेरणा

इक्कीसवीं सदी का क्रिसमस हमें कुछ बेहद महत्वपूर्ण वैश्विक प्रेरणाएं देता है। आज क्रिसमस के साथ चैरिटी, फूड डाइव्स, शेल्टर होम्स और ऑनलाइन फंड रेजिंग जुड़ चुके हैं। लोग यह समझने लगे हैं कि सच्चा उत्सव तभी है, जब खुशियां दूसरों के संग बांटी जाएं। क्रिसमस अब सिर्फ ईसाइयों का पर्व नहीं रह गया। गैर-ईसाई समाज भी इसे एक मानवीय और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाता है, जो विविधता में एकता का संदेश देता है। युद्ध, संघर्ष और अस्थिरता के वर्तमान दौर में क्रिसमस का 'पीस ऑन अर्थ' वाला विचार, पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। यह हमें याद दिलाता है कि शांति कोई अमूर्त सपना नहीं बल्कि रोजमर्रा के छोटे व्यवहारों से भी संभव है।

महत्वपूर्ण है अर्थपूर्ण उत्सव

यह सच है कि आधुनिक क्रिसमस में बाजार का प्रभाव बढ़ा है- सेल्स, ऑफर्स और ब्रांडिंग हर जगह दिखती है। लेकिन इसके समानांतर एक नई सोच भी उभर रही है, मिनिमल और अर्थपूर्ण क्रिसमस। आज कई लोग 'कम खरीदो, बेहतर जियो' के विचार के साथ क्रिसमस मना रहे हैं। हैंडमेड गिफ्ट्स, अनुभव आधारित उपहार (जैसे समय देना, साथ घूमना) और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार सजावट। ये बदलाव बताते हैं कि खुशी की अतिरिक्त परतें दिखावे से नहीं, सार्थकता से आती हैं।

क्रिसमस मनाने के ऐतिहासिक-धार्मिक संदर्भ

क्रिसमस ईसाई धर्म का सबसे बड़ा पर्व है, जिसे यीशु मसीह के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है। ईसाई मान्यता के अनुसार यीशु का जन्म मानवता को पाप, हिंसा और अन्याय से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था। बाइबिल की कथा के अनुसार, यीशु का जन्म बेथलेहम में एक गौशाला में हुआ, जहां उनकी माता मरियम ने उन्हें जन्म दिया और यूसुफ उनके संरक्षक थे। यह कथा ईसाई धर्म में विनम्रता, त्याग और करुणा का मूल प्रतीक मानी जाती है। 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाने की परंपरा यीशु के जन्मदिन से जुड़ी है। इतिहासकारों के अनुसार चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य ने 25 दिसंबर को यीशु के जन्म दिवस के रूप में स्वीकार किया। इसका एक कारण यह भी था कि इसी समय रोम में 'सैटर्नेलिया' और 'सोल इन्विक्टस' जैसे सूर्य-उत्सव मनाए जाते थे। ईसाई धर्म के प्रसार के दौरान इन लोकप्रिय पर्वों को एक नए धार्मिक अर्थ के साथ जोड़ा गया, जिससे क्रिसमस व्यापक रूप से स्वीकार्य हो सका।

धार्मिक दृष्टि से क्रिसमस सिर्फ जन्मोत्सव नहीं बल्कि ईश्वर के प्रेम के अवतरण का प्रतीक है। ईसाई आस्था के अनुसार यीशु 'ईश्वर के पुत्र' हैं, जो मानव रूप में धरती पर आए ताकि प्रेम, क्षमा और दया का संदेश दे सकें। इसी कारण क्रिसमस के दौरान चर्चों में विशेष प्रार्थनाएं, मध्यरात्रि मिस्सा, कैरोल गायन और बाइबिल पाठ किए जाते हैं।

क्रिसमस सेलिब्रेशन से जुड़ी परंपराएं

क्रिसमस को पारंपरिक रूप से एक धार्मिक, पारिवारिक और सामुदायिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसकी तैयारियां एडवेंट काल से शुरू होती हैं, जो क्रिसमस से लगभग चार सप्ताह पहले आता है। इस दौरान लोग आत्मचिंतन, प्रार्थना और संयम पर ध्यान देते हैं। कई परिवार, घरों में एडवेंट कैंडल जलाते हैं, जो आशा और प्रकाश का प्रतीक मानी जाती है। घरों और चर्चों की सजावट, क्रिसमस की सबसे प्रमुख परंपरा है। क्रिसमस-ट्री सजाना भी इसका प्रमुख अंग है, जिसे रोशनी, सितारों, घंटियों और सजावटी गेंदों से सजाया जाता है। ट्री के ऊपर लगाया जाने वाला तारा बेथलेहम के उस तारे का प्रतीक है, जिसने तीन ज्ञानी पुरुषों को यीशु के जन्मस्थल तक पहुंचाया था। साथ ही कई स्थलों पर नैटिविटी सीन (यीशु के जन्म का दृश्य) लगाया जाता है। क्रिसमस ईव (24 दिसंबर की रात) को चर्चों में मिडनाइट मास होती है, जिसमें प्रार्थना, बाइबिल पाठ और सामूहिक कैरोल्स गाए जाते हैं। क्रिसमस के दिन परिवार और मित्र एक साथ मिलते हैं, विशेष भोज का आयोजन होता है और एक-दूसरे को उपहार दिए जाते हैं। बच्चों के लिए सांता क्लॉज की परिकल्पना खास आकर्षण होती है, जो उदारता और खुशी बांटने का प्रतीक है।

सकारात्मक प्रेरणाओं का उत्स

आज के संदर्भ में क्रिसमस हमें तीन सबसे सकारात्मक बातें सिखाता है।

उम्मीद: चाहे दुनिया कितनी भी अनिश्चित क्यों न हो, क्रिसमस उम्मीद का पर्व है। यह नए सिरे से शुरू करने की प्रेरणा देता है।

रिश्तों की प्राथमिकता: यह पर्व याद दिलाता है कि जीवन की असली पूंजी हमारे संबंध हैं, न कि भौतिक उपलब्धियां।

मानवीय गरिमा: क्रिसमस का मूल संदेश- प्रेम, क्षमा और करुणा, आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना सदियों पहले था। कहने का सार यही है कि इक्कीसवीं सदी में क्रिसमस फेस्टिवल का रोमांच बाहरी चमक से ज्यादा आंतरिक अर्थ में बसता है। हमारी खुशियां शायद अधिक सजावटी नहीं हुईं, लेकिन अधिक सजग जरूर हुई हैं। *

{ अमेजिंग / शिखर चंद जैन }

दुनिया के सबसे अनूठे क्रिसमस-ट्री

क्रिसमस के अवसर पर दुनिया भर में बेशुमार क्रिसमस ट्री सजाए जाते हैं। लेकिन कुछ क्रिसमस ट्री इतने अनूठे तरीके से सजाए जाते है कि उनकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां हम आपको दुनिया के कुछ ऐसे ही अमेजिंग क्रिसमस ट्री के बारे में बता रहे हैं।

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री
यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री, 3 दिसंबर की शाम से ही आम लोगों के देखने के लिए अपनी सजधज के साथ रेडी हो जाता है। यह 75 फुट ऊंचा नॉर्वे स्प्रूस पेड़ है, जो ईस्ट ग्रीनबुश, न्यूयॉर्क से लाया गया है। इसे मैनहट्टन के मध्य में 30 रॉकफेलर प्लाजा में सजाया जाता है। यह 10 जनवरी तक देखने के लिए उपलब्ध रहता है। 2004 से स्थापित यह क्रिसमस ट्री 30,000 एलईडी लाइटों से रोशन होता है, जो सौर पैनलों से चलती हैं। 2007 से इस पर 550 पाउंड का स्वारोवस्की क्रिस्टल स्टार लगा हुआ है।

क्रिसमस का उत्सव क्रिसमस-ट्री के बिना अधूरा है। वैसे तो क्रिसमस-ट्री वास्तव में पाइन, डगलस, बालसम या फर का पेड़ होता है। ये पेड़ सदा हरे-भरे रहते हैं इसलिए इन्हें सजावट के लिए चुना जाता है। लेकिन दुनिया भर में अलग-अलग चीजों के उपयोग से एक से बढ़कर एक कृत्रिम क्रिसमस-ट्री भी खूब बनाए और सजाए जाते हैं। आइए जानते हैं कुछ अनूठे क्रिसमस-ट्री के बारे में।

टंबलवीड ट्री यूएसए: चांडलर, संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिजोना राज्य में मैरिकोपा काउंटी में स्थित एक शहर और फीनिक्स का एक उपनगर है। यह तकनीक और नवाचार का एक प्रमुख केंद्र है। यहां टंबलवीड-ट्री नामक प्रसिद्ध क्रिसमस-ट्री है, जिसे हर साल एक खास परंपरा के तहत बनाया जाता है। 1957 से चली आ रही इस परंपरा में हजारों टंबलवीड्स और रोशनी का उपयोग होता है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब आग लगने से शहर की क्रिसमस की सजावट नष्ट हो गई थी। तब लोगों ने इस अनूठे पेड़ का इस्तेमाल किया था। यह पारंपरिक क्रिसमस-ट्री की तरह नहीं है, बल्कि सूखी झाड़ियों (टंबलवीड्स) को इकट्ठा करके बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए लगभग 1,000 से अधिक टंबलवीड्स और 1,200 रंगीन बल्बों का उपयोग किया जाता है।

बिग क्रिसमस-ट्री इटली: यह दुनिया के सबसे अनूठे और सबसे ज्यादा लाइटों वाले क्रिसमस-ट्रीज में शामिल है। इटली के गुब्बीओ में माउंट इजिनो पर बना यह विशाल-ट्री 1981 से मौजूद है। यह दुनिया के सबसे बड़े क्रिसमस-ट्री के रूप में जाना जाता है, जिसे 1991 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था। यह माउंट इंगिनो की ढलान पर हजारों लाइटों और 7.5 किमी लंबे बिजली के तार से बना एक भव्य लाइट डेकोरेशन से बनता है, जो एक विशाल क्रिसमस-ट्री का आकार लेता है। इसकी ऊंचाई लगभग 750 मीटर और आधार पर चौड़ाई 450 मीटर होती है। इसे आमतौर पर 7 दिसंबर से 6 जनवरी तक सजाया जाता है। हर साल क्रिसमस के समय हजारों पर्यटक इसे देखने आते हैं।

स्काई ट्री जापान: क्रिसमस के अवसर पर जापान के टोक्यो में कई प्रसिद्ध क्रिसमस ट्री और लाइट-अप शोज डेकोरेट किए जाते हैं, जिनमें टोक्यो स्काई-ट्री का विशालकाय क्रिसमस-ट्री भी शामिल है। टोक्यो स्टेशन के मारुनोउची क्षेत्र के पास किट्टे बिल्डिंग के बाहर जापान का यह सबसे बड़ा क्रिसमस-ट्री सजाया जाता है। यह 14 मीटर ऊंचा है। इसे आकर्षक रोशनी से सजाया गया है। यहां लगभग 500,000 बल्ब्स का शो आयोजित होता है, जो 'क्विंकल थ्री स्टार्स' और अन्य लाइट-अप थीम के साथ प्रदर्शित किया जाता है। किट्टे बिल्डिंग टोक्यो में सबसे ऊंची इमारत है, जो इसका प्रतीक चिन्ह भी बन गया है। इनके निकट ही स्थित ग्योको-डोरी स्ट्रीट और नाका-डोरी स्ट्रीट को भी उत्सव की रोशनी से सजाया जाता है। इसके अतिरिक्त क्रिसमस के अवसर पर यहां के ओमोतेसांडो, रोपोंगी और ओडेबा जैसे कई क्षेत्रों में सुंदर लाइटिंग डिस्प्ले आयोजित किए जाते हैं।

ओरिगामी क्रिसमस-ट्री यूएसए: न्यूयॉर्क का वर्ल्ड फेमस ओरिगामी क्रिसमस-ट्री, किसी भी दूसरे क्रिसमस-ट्री से अलग है। यह अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री (एएमएनएच) में मौजूद है। यह लगभग 13 फीट लंबा पेड़, कागज से बने हुए जानवरों, जड़ी-बूटियों और अन्य आकृतियों से सजाया जाता है, जो ओरिगामी कलाकारों द्वारा बनाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के ओरिगामी रंगों में सजा यह पेड़ देखने में बहुत आकर्षक और बेहद रंगीन लगता है। *

{ कविता / हेमधर शर्मा }

कृतज्ञता और कृतघ्नता

जो देता है हम उसे देवता कहते हैं
फिर क्यों हरदम लेने की
इच्छा रखते हैं?
जड़ जिन्हें समझते हैं हम
पौधे-पेड़ सभी तो देते हैं
फिर याचक बनकर ही
खुश क्यों हम रहते हैं?
हो सकता है हों बुद्धिमान हम
दुनिया में सबसे ज्यादा
खुदगर्ज बनाए लेकिन जो
क्या बुद्धि उसी को कहते हैं?
लेता है कोई काम अगर
प्रतिदान नहीं देता है तो
अन्यायी उसे समझते हैं
फिर जड़-चेतन सबसे लेकर
मन में कृतज्ञ भी हो न सके
ऐसा कृतघ्न मानव बनकर
कैसे हम सब जी लेते हैं?

{ व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय }

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके।

कैमरों की चमकती चंचल चाहतें

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके। वह तो यह कैमरा ही है, जिसके आते ही तमाम बाराती नागिन हो जाते हैं और उनकी रूमाल से अपने आप ही बीन की धुनें निकलने लग जाती हैं। सोचता हूं, कहीं कल जंगल में मोर भी यह कहकर नाचने से इनकार न कर दें कि इधर कैमरे तो हैं ही नहीं। जब कोई फिल्म ही नहीं बना रहा, तो फिर जंगल में ऐसे नाच का आखिर फायदा भी क्या?

धरना, प्रदर्शन, अनशन, घेराव, रैली, भाषण, चुनाव, सबको कैमरे चाहिए। वह भी ऐसे-वैसे नहीं, समाचार चैनलों वाले। एक नहीं, अनेक। हर कोण से कवरेज जरूरी है। जिस काम को दुनिया न देखे, वह काम भी किस काम का? जिन्हें इन कैमरों से ज्यादा लगाव होता है, ऐसे साहसी लोग गुप्त कैमरों से भी भय नहीं खाते। यह जानते हुए कि जमाना स्टिंग ऑपरेशन का है और कभी भी धरे जा सकते हैं, वे तब भी अपना असली काम कर ही डालते हैं।

'आप कैमरे की नजर में हैं।' मैं जहां कहीं पर भी यह बोर्ड लगा देखता हूं, मुझे हंसी आने लगती है। ऐसे बोर्ड चोर को पकड़ने के लिए लगाए गए होते हैं कि उन्हें सहयोग करने के लिए कि यहां हरकत की, तो तू पकड़ा जा सकता है। जा, बिना कैमरे वाली जगह तलाश। मैं सोचता हूं, यदि चोर भी सीसीटीवी कैमरों से भयग्रस्त होकर अपना चौर्य-कर्म त्याग चुके होते, तो हम आए दिन चोरी की वारदात की खबरें पढ़ने, सुनने और देखने को तरस जाते। क्या पता, कैमरा उन्हें नया उत्साह देता हो। अब तो कैमरों को प्रोफेशनल फोटोग्राफरों की दरकार भी नहीं रही। सभी के हाथों में मोबाइल कैमरे हैं और सेल्फियों की चमकती हुई चंचल चाहतें। इसके एकनेत्री स्वरूप पर आज पूरा विश्व मोहित है। तभी तो, युद्ध हो या शांति, लोग अपनी आंखों से अधिक इन कैमरों की दिखलाई हुई चीजों पर विश्वास करने लगे हैं। *

{ लघुकथा / चंद्रप्रकाश डाले }

उपेक्षा के आंसू

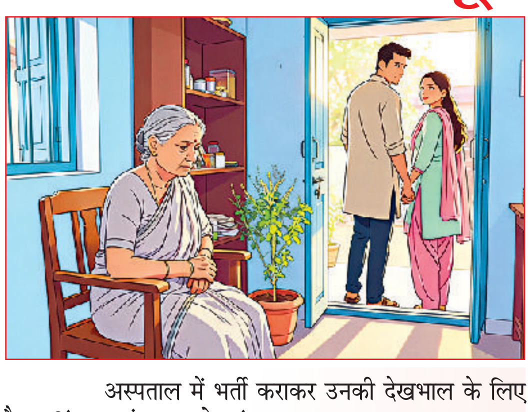

एआई इमेज

अस्पताल में चार दिनों से भर्ती सविता जी ने नर्स से पूछा, 'सिस्टर, मेरा बेटा आया था क्या?'

नर्स बोली, 'अरे माता जी, आप चार दिन से यही रट लगाए हैं कि बेटा आया है क्या, अरे आज तो आपकी छुट्टी होने वाली है।'

मां की आंखों में आंसू आ गए। रुंधे गले से बोलीं, 'मैं उसकी मां हूं ना। मैंने बड़ी तकलीफ, त्याग और तपस्या से उसको पाला है। इसलिए बार-बार उसके बारे में पूछती हूं। खैर, कोई बात नहीं।'

नर्स बोली, 'माता जी, बस आप तैयार हो जाइए, अस्पताल से छुट्टी मिल गई है, अब आपको घर जाना है, अपने बेटे के पास। आपके बिल वगैरह सब बन गए, उसका पेमेंट भी मिल चुका है।'

सविता ने फिर पूछा, 'मेरा बेटा लेने आया है क्या?'

'नहीं माता जी, ड्राइवर गाड़ी लेकर आया है।' नर्स ने बताया।

कुछ न कहकर, आंखों में आंसू छुपाते हुए सविता जी गाड़ी में बैठकर घर पहुंच गईं, लेकिन बेटे की उपेक्षा से खुद को थका हुआ और निराश महसूस कर रही थीं।

कुछ देर बाद ही बहू के मायके से फोन आया कि उसकी मां की तबियत खराब हो गई है। बहू ने तत्काल अपने पति को ऑफिस में फोन किया और बोली, 'आप तुरंत घर आ जाइए, मेरी मां की तबियत बहुत खराब है। और सुनो चार-पांच दिनों की छुट्टी भी ले लेना। मां को अस्पताल में भर्ती कराकर उनकी देखभाल के लिए वहां रुकना होगा।'

सासु मां की तबियत की खबर सुनकर सविता जी का बेटा तत्काल घर आ गया और जल्दी से तैयार होकर अपनी पत्नी के साथ ससुराल जाने लगा। दरवाजे से बाहर निकलते हुए जैसे उसे कुछ याद आया और वह पलटकर अपनी मां से बोला, 'मां, हम दोनों चार-पांच दिन के लिए जा रहे हैं। आप घर का ख्याल रखना।'

मां ने उन दोनों को जाते हुए देखा। मायूस होकर पास रखी कुर्सी पर बैठ गई। सोचने लगी, अस्पताल में भी वह अकेली थी, अब घर में भी अकेली है। साथ में थे तो सिर्फ आंसू। उपेक्षा से उपजे आंसू। *

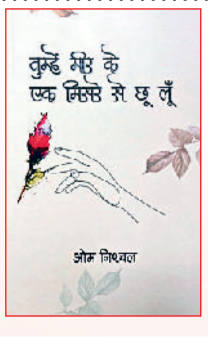

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

अंतस को छूते गीत

वरिष्ठ साहित्यकार ओम निश्चल के गीतों का नया संग्रह 'तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं' हाल में छपकर आया है। आज के दौर में जब छंदमुक्त कविताओं की बाढ़ आई हुई है, ऐसे में अत्यंत कोमलता को खुद में समेटे हुए, रुई के फाहे-से ये गीत हमारी रूह को हौले से छू लेते हैं। इन गीतों में खास तौर पर प्रेम के अनेक रंग तो पैबस्त हैं ही, इनके साथ ही जीवन की विडंबनाएं, अलग-अलग ऋतुओं का सौंदर्य, खेती-किसानी, मिट्टी का सोंधापन, सांस्कृतिक नगरों की छटा, पारंपरिक पर्वों की आभा, ईश्वर के प्रति अहैतुक आस्था और कुछ अनकहे से रिश्तों की खुश्बू को भी शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। गीतों के रचाव और शब्दों के चयन में ओम जी प्रयोगधर्मी रहे हैं, किसी भाषा को लेकर उनकी रचनात्मकता में कोई हठधर्मिता नहीं दिखती है। इसके साथ ही वे पढ़ने वाले के अंतस में भावनाओं का अप्रतिम प्रतिसंसार भी रचते चलते हैं। इसकी बानगी संग्रह के कई गीतों में देखी जा सकती है। अतीत में घटित प्रेम को बेहद मार्मिकता से वे शब्दों में पिरोते हुए कहते हैं, *'पलकें बोझिल और उनींदी रातें होती थीं/बरसों पहले तुमसे कितनी बातें होती थीं।'* तो कहीं जीवन की क्रूरता के समक्ष विवश मन कराह उठता है, *'प्रार्थना में फूल, मन में अर्घ्य देकर/लौट आए डबडबाई आंख लेकर।'* कहीं अपने आराध्य प्रभु की भक्ति में गीतकार का मन पुलकित होकर गा उठता है, *'दीप घर-घर जले हैं अवध में पिया/आज लौटे अयोध्या में रघुवर-सिया।'* तो कहीं प्राचीन नगर के सांस्कृतिक वैभव को देखकर वे अंतस के उल्लास को व्यक्त करने से रोक नहीं पाते, *'काशी के घाट निराले, रे भैया/काशी के घाट निराले।'* और प्रेम मिलन को व्यक्त करती ये पंक्तियां तो बेमिसाल हैं, *'पलकों को होठों की धड़कन से छू लूं/सुनाऊं गजल कोई गालिब की तुमको/तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं।'* *

पुस्तक: तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं (गीत-संग्रह), रचनाकार: ओम निश्चल, मूल्य: 300 रुपए, प्रकाशक: हिंदी अकादमी, दिल्ली

अक्सर जब क्रिसमस का हो तो केक का जिक्र होता ही है। घर-घर में इसे बनाया और फ्रेंड्स-रिलेटिव्स के संग एंज्वॉय भी किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि केक बनाने की शुरुआत कब हुई? इसका आकार, स्वाद कैसे बदला? जानिए, केक से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

टेस्टी केक से जुड़ी अनूठी-रोचक बातें

रोचक / शिखर चंद जैन

बच्चे ही नहीं, बड़ी उम्र के भी अधिकांश लोगों को केक खाना पसंद होता है। किसी का बर्थडे हो या मैरिज एनिवर्सरी या कोई और सेलिब्रेशन, खुशी और जश्न के खास मौकों पर केक कट कर खिलाने का चलन है। केक खाने में जितने यमी होते हैं, उतनी ही दिलचस्प इससे जुड़ी कुछ बातें भी हैं। इनके बारे में यहां बता रहे हैं।

कैसा था शुरुआती केक: शुरुआती दौर में बनने वाले केक आज की तरह सॉफ्ट, डिजाइनर और अट्रैक्टिव नहीं होते थे। ये अनाज के बने हुए सघन और चपटे (डेंस और फ्लैट) होते थे। इन्हें पीसे हुए अनाजों में खमीर (यीस्ट) उठाकर बनाया जाता था। फिर इन्हें सुखाकर जमाया जाता था। आज हम जिस तरह के केक का आनंद लेते हैं, उनसे मिलते-जुलते केक 18वीं-19वीं शताब्दी में बनने शुरू हुए।

ऐसे हुई क्रिसमस केक की शुरुआत: रोम में शुरुआती दौर में क्रिसमस के अवसर पर मीठी रोटियां बनाई जाती थीं। मध्यकाल तक आते-आते इन मीठी रोटियों का स्थान प्लम-पॉरिज (आलू बुखारा, ओट्स, फ्रूट्स, ड्राय फ्रूट्स आदि मिलाकर बनाया गया दलिया) ने ले लिया। 16वीं सदी तक आटे, अंडे, मक्खन से प्लम केक बनने शुरू हो गए। इसे 'ट्वेल्थ नाइट केक' कहा जाता था। धीरे-धीरे ये ट्वेल्थ नाइट केक, क्रिसमस के उत्सव का एक अभिन्न हिस्सा बन गए। आज क्रिसमस के अवसर पर हम जो 'फ्रूट केक' या 'आइस्ड केक' खाते हैं, वह इसी ट्वेल्थ नाइट केक का अपडेटेड वर्जन है।

केक पर सर्वाधिक कैंडल्स जलाने का रिकॉर्ड: क्या आप जानते हैं कि बर्थडे केक पर सबसे अधिक कैंडल्स जलाने का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड भी है? जन्मदिन के केक पर सबसे ज्यादा मोमबत्तियां जलाने का विश्व रिकॉर्ड 2016 में आश्रित फुरमान और न्यूयॉर्क स्थित श्री चिन्मय केंद्र ने बनाया था, जब केक पर 72,585 मोमबत्तियां जलाई गई थीं। यह केक ध्यान गुरु श्री चिन्मय के 85वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में बनाया गया था। श्री चिन्मय केंद्र के 100 सदस्यों ने मिलकर यह अनोखा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था।

बर्थडे पर केक काटने की शुरुआत: जन्मदिन के अवसर पर दुनिया के अधिकांश देशों में केक काटा जाता है, खाया-खिलाया जाता है। माना जाता है कि 16वीं-17वीं सदी में जर्मनी में पहली बार छोटे बच्चों का जन्मदिन मनाने के लिए केक बनाना शुरू किया गया। इस केक को 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। ये केक दिखने में आज के केक से काफी मिलते-जुलते होते थे। फिर धीरे-धीरे केक बर्थडे सेलिब्रेशन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनता गया।

पॉपुलर केक फ्लेवर्स: जन्मदिन के केक की बात करें तो ज्यादातर लोगों के लिए चॉकलेट सबसे पसंदीदा फ्लेवर होता है, उसके बाद नंबर आता है वनीला फ्लेवर का। जर्मन चॉकलेट केक दुनिया के सबसे मशहूर केक्स में से एक है। इंटरेस्टिंग बात यह है कि 'जर्मन चॉकलेट केक' की उत्पत्ति जर्मनी में नहीं हुई थी। दरअसल, इसका संबंध सैमुअल जर्मन नामक एक अमेरिकी व्यक्ति से था, जिन्होंने 1852 में एक डार्क बेकिंग चॉकलेट बनाई थी। इसे 'जर्मन्स स्वीट चॉकलेट' के नाम से जाना जाता था। 1957 में इस रेसिपी का इस्तेमाल केक बनाने में किया गया और 'जर्मन्स चॉकलेट केक' शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। तब से इसे इसी नाम से जाना जाता है। *

केक से रिलेटेड कुछ इंटरेस्टिंग फैक्ट्स

- दुनिया का सबसे महंगा केक 'पाइरेट्स फैंटेसी' था जिसकी कीमत लगभग 35 मिलियन डॉलर थी।

- शिकागो के पैट्रिक बर्टोलेटी 'डीप डिश' ने 2012 में छह मिनट में 72 कप केक खाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।
- कप केक की रेसिपी गूगल पर सबसे ज्यादा सर्च की जाने वाली रेसिपीज में से एक है।
- दुनिया का सबसे ऊंचा केक बनाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के कुछ स्कूली बच्चों के नाम है। 33 मीटर (108.27 फीट) ऊंचे इस केक को हाकासिमा-निलासरी कलिनरी स्कूल के बच्चों ने क्रिसमस के अवसर पर बनाया था।
- पुराने जमाने में इंग्लैंड में मान्यता थी कि तकिए के नीचे 'फ्रूट केक' रखकर सोने से सुंदर पति मिलता है। इसे 'ड्रीमिंग केक' भी कहा जाता था।

पहला मैरिज फंक्शन केक

आजकल शादियों में भी केक काटने का ट्रेंड बढ़ने लगा है। यह परंपरा कब से शुरू हुई, यह तो पुख्ता तौर पर नहीं कहा जा सकता, मगर पहले विवाह केक का उल्लेख 1858 में मिलता है। यह ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया की सबसे बड़ी बेटी (उसका नाम भी विक्टोरिया था) के मैरिज फंक्शन के लिए बनाया गया था। प्रिंसेस विक्टोरिया का विवाह केक तीन गज चौड़ा और 300 पाउंड वजन का था, लेकिन वह सिर्फ एक मंजिला था। उनकी शादी के केक पर सफेद आइसिंग का पहली बार इस्तेमाल किया गया था। तभी से इस तरह की आइसिंग को 'रॉयल आइसिंग' के नाम से जाना जाता है।

हम जो चाहते हैं, हमेशा वैसा ही हो, यह हमारे हाथ में नहीं है। लेकिन खुश रहना हमारे हाथ में है। कुछ छोटी-छोटी बातों और आदतों को अगर हम अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो यकीन मानिए, हम हमेशा खुश रह सकते हैं। ऐसी ही कुछ काम की बातों के बारे में जानिए।

अपना लें ये आदतें हमेशा रहेंगे खुश

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

किसी ने कितनी सही बात कही है, 'अपने दुःखों को भगाने का एक ही रास्ता है, खुश रहना।' सब खुश रहना चाहते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि खुशियों को अपने दामन में समेट कर कैसे रखा जाए? डॉ. ए. शिंडलर के अनुसार, 'दुःख ही सभी मनोदैहिक रोगों का एकमात्र कारण है और खुशी ही एकमात्र उपचार है।' डिजीज शब्द का अर्थ ही दुःख की अवस्था है। डिज-ईज यानी आराम से न रहना। दरअसल, खुशी एक मानसिक स्थिति है, जो काफी हद तक हमारी आदतो पर निर्भर करती है।

क्या है हैप्पी-ओलॉजी: विशेषज्ञों का मानना है कि खुशी हासिल करने का एक वैज्ञानिक नजरिया भी होता है और हर कोई अपने दैनिक जीवन में खुश होने के लिए छोटे-छोटे कारण ढूंढ़ सकता है। इसे ही 'हैप्पी-ओलॉजी' कहते हैं। इसके मुताबिक किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति से खुश या संतुष्ट होना आपके ऊपर निर्भर करता है। आप चाहें तो किसी बात से चिढ़कर गुस्सा या उदास हो सकते हैं और आप चाहें तो इन नकारात्मक भावनाओं से ऊपर उठकर खुद को खुश रख सकते हैं, यानी खुश रहना हमारे हाथ में है। सुविख्यात लेखक एवं विद्वान डेल कार्नेगी ने भी कहा है, 'प्रसन्नता बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती, वह हमारे मानसिक दृष्टिकोण से संचालित होती है।' विलियम जेम्स ने कहा है, 'हम इसलिए नहीं हंसते कि हम खुश हैं, बल्कि हम इसलिए खुश हैं कि हम हंसते हैं।'

खोज लीजिए अपना हैप्पियोलॉजिस्ट: व्यवहार विशेषज्ञ कहते हैं, आप खुद अपना हैप्पियोलॉजिस्ट खोज सकते हैं। अपने इर्द-गिर्द एक ऐसे इंसान को ढूंढ़ निकालें, जो आपके हिसाब से सदा खुश रहता है और उसे अपना आदर्श यानी हैप्पियोलॉजिस्ट बना लें। आप देखेंगे कि ये लोग जरा-जरा सी बातों में ही बच्चों की तरह खुश हो जाते हैं और खिलखिलाकर हंसने लगते हैं। ये खुशी हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करती है। कोई चाहे तो 10 रुपए की ऑरेंज आइसक्रीम खाकर खुश और संतुष्ट हो सकता है, वहीं आदतन दुःखी रहने वाला इंसान 100-150 की ब्रांडेड आइसक्रीम खाकर भी दुःखी ही नजर आएगा और उसके स्वाद में कोई न कोई नुक्स ढूंढ़ निकालेगा।

छोटी-छोटी चीजों में खोज लें खुशी: वैज्ञानिकों ने अपनी स्टडीज में पाया है कि खुश होने के लिए आप बड़ी चीजों का इंतजार न करें, छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूंढ़ें। मिरियम लीगलर ने अपनी पुस्तक 'फाइंडिंग योर इनर हैप्पियोलॉजी' में लिखा है, 'हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत-सी सामान्य चीजें ऐसी हैं, जिनसे हम खुशी महसूस कर सकते हैं। बस इन चीजों के प्रति हमारा नजरिया ऐसा होना चाहिए।'

ठान लें कि खुश रहना है: वाल्टेयर ने कहा है, 'मैंने खुश रहना चुना, क्योंकि यह मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।' इस संबंध में अब्राहम लिंकन की बात भी बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था, 'अधिकांश लोग लगभग उतने ही खुश होते हैं, जितना खुश रहने का वे मन बनाते हैं।'

हैप्पियोलॉजिस्ट सुजाना हैलोनेस किसी समय एक दुःखी और निराश इंसान थीं। उन्हें अपनी जिंदगी और जॉब से बेशुमार शिकायतें थी। एक दिन अचानक उन्होंने खुद को बदल डाला। अब वे हैप्पीनेस के प्रोजेक्ट पर काम करती हैं और बेहद खुश रहती हैं।

खुशी से मिलेगी सफलता: सुजाना हैलोनेस अपनी वेबसाइट पर लिखती हैं, 'मैंने सीख लिया कि सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि खुशी से सफलता मिलती है।' खुश रहने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही हमारी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी भी बढ़ती है। लोगों के साथ रिश्ते भी इंप्रूव होते हैं। जाहिर है, खुशी सफलता का माध्यम बन जाती है। सुजाना कहती हैं, 'खुशी एक अभ्यास है, मंजिल नहीं।'

मुस्कुराइए-हंसिए हर रोज: ब्रिटेन के हिप्नोटिस्ट और व्यवहार विज्ञानी पॉल मैकेना ने अपनी किताब 'आइ कैन मेक यू हैप्पी' में लिखा है कि रोज 20 बार हंसें और 20 बार मुस्कुराएं। भले ही आपको ऐसा जबरन करना पड़े। मुस्कुराने और हंसने से आपके शरीर में सेरोटोनिन रिलीज होता है, जो एक फील गुड हॉर्मोन है। कुछ दिनों बाद आप खुश रहने के अभ्यस्त हो जाएंगे। *

जानकारी / अलका 'सोनी'

इसलिए कहते हैं मैरी क्रिसमस!

क्रिसमस का त्योहार लगभग पूरी दुनिया में मनाया जाता है। सभी देश अपने-अपने तरीके से इसे मनाते हैं। इसे मनाने का तरीका चाहे जो भी हो, एक बात जो हर जगह कॉमन होती है वह है क्रिसमस की शुभकामनाएं एक-दूसरे को देते हुए 'मैरी क्रिसमस' बोलना। अन्य मौकों पर, चाहे वो न्यू ईयर हो या फिर होली, दीवाली जैसे त्योहार। लोग एक-दूसरे को 'हैप्पी' बोलकर शुभकामनाएं देते हैं, जैसे- 'हैप्पी न्यू ईयर', 'हैप्पी दिवाली' आदि। लेकिन क्रिसमस के लिए बोलते हैं- मैरी क्रिसमस।

कैसे हुई 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत: क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत को लेकर कई संदर्भ मिलते हैं। सन 1534 में लंदन के बिशप जॉन फिशर ने क्रिसमस के मौके पर हेनरी अष्टम के प्रमुख मंत्री थॉमस क्रोमवेल को पत्र लिखकर 'मैरी क्रिसमस' विश किया था। इसके अलावा मैरी क्रिसमस बोलने का उल्लेख 1843 में लिखे गए चार्ल्स डिकेंस के उपन्यास 'ए क्रिसमस कैरोल' में भी किया गया है।

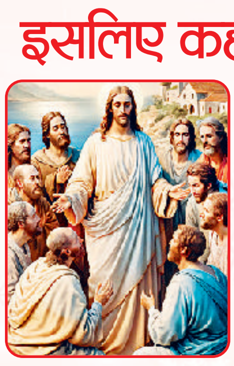

मदर मैरी के सम्मान में: ईसा मसीह की मां 'मरियम' ईसाई धर्म में बहुत सम्मानित मानी जाती हैं। उन्हें सभी ईसाइयों की माता और मानव जाति में सर्वोच्च इंसान माना जाता है। मरियम को 'मैरी' नाम से भी जाना जाता है। इसलिए एक मान्यता यह भी है कि मदर मैरी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए 'हैप्पी क्रिसमस' के स्थान पर 'मैरी क्रिसमस' बोलकर क्रिसमस विश किया जाता है।

मतलब है समान: 'मैरी' शब्द का अर्थ हर्षित, आनंदित या उल्लासपूर्ण होता है। यह शब्द अकसर उत्सव और खुशी के अवसरों के साथ जुड़ा होता है। 'हैप्पी' का अर्थ होता है 'खुश' या 'संतुष्ट'। कुछ भाषाविदों का मानना है कि 'हैप्पी' व्यक्तिगत खुशी पर जोर देता है, जबकि 'मैरी' सामूहिक और सांस्कृतिक उत्सव की खुशियों को व्यक्त करता है। क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी' शब्द इसलिए उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह उत्सव और उल्लास के सामूहिक अभिव्यक्ति को बेहतर ढंग से प्रकट करता है। बहरहाल, मैरी या हैप्पी दोनों ही शब्दों का प्रयोग खुशी जाहिर करने के लिए ही किया जाता है। इसलिए आप इनमें से कुछ भी बोलकर विश कर सकते हैं। *

भारत में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक गणित के प्रकांड ज्ञानी हुए हैं। राष्ट्रीय गणित दिवस (22 दिसंबर) के अवसर पर हम आपको कुछ महान भारतीय गणितज्ञों के बारे में बता रहे हैं।

गणित को समृद्ध करने वाले भारत के महान गणितज्ञ

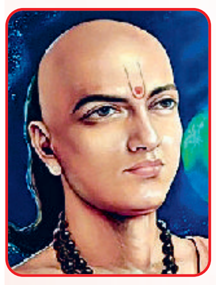

आर्यभट्ट

श्रीनिवास रामानुजन

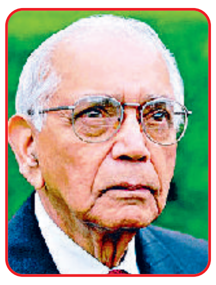

सी. आर. राव

विभूतियां / नेहा जैन

यह हम भारतीयों के लिए गर्व का विषय है कि भारत के विद्वानों ने दुनिया को गणित के महत्वपूर्ण, मूलभूत सिद्धांतों और नियमों की जानकारी दी। 400 ई. से 1500 ई. के बीच के काल को भारतीय गणित का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में भारतीय गणितज्ञों ने कई नए गणितीय सिद्धांत दिए। भारतीय गणितज्ञों को कालखंड के हिसाब से मुख्यतया दो भागों में बांटा जा सकता है-पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञ और आधुनिक भारत के गणितज्ञ। पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञों में शामिल कुछ प्रमुख हस्तियां हैं-

आर्यभट्ट (476-550 ईस्वी): इन्हें भारतीय गणित का पिता माना जाता है। आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ 'आर्यभटीय' के माध्यम से गणितीय सोच में क्रांति ला दी। उन्होंने ही स्थानीय मान प्रणाली, शून्य की अवधारणा और त्रिकोणमितीय कार्यों के प्रारंभिक रूपों को प्रस्तुत किया। आर्यभट्ट ने ही 'पाई' के मूल्य की सटीक गणना की, बीजीय समीकरणों के समाधान प्रस्तावित किए और पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने की व्याख्या की। यह अवधारणा अपने समय से बहुत आगे थी।

ब्रह्मगुप्त (598-668 ईस्वी): शून्य को एक संख्या के रूप में मानने और उसके लिए नियम स्थापित करने वाले ब्रह्मगुप्त पहले व्यक्ति थे। इसके अलावा, उन्हें द्विघात समीकरण का पहला स्पष्ट विवरण देने और गुरुत्वाकर्षण को एक आकर्षक बल के रूप में वर्णित करने के लिए जाना जाता है। 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' और 'खंडखाद्यक' उनकी दो सबसे प्रसिद्ध कृतियां हैं।

भास्कर प्रथम (600-680 ईस्वी): इन्होंने संख्याओं को लिखने के लिए हिंदू और अरबी दशमलव पद्धति का प्रयोग सबसे पहले किया था। 'आर्यभटीय' पर उनका विश्लेषणात्मक कार्य, 'आर्यभटीय भाष्य', खगोल विज्ञान और गणित पर सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ माना जाता है। उन्हें स्थानीय मान के अनुसार संख्याओं के निरूपण के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

शकुंतला देवी

भास्कर द्वितीय (1114-1185 ईस्वी): इन्होंने नक्षत्र वर्ष की लंबाई और चंद्रमा के समीकरण जैसी कई खगोलीय राशियों को परिभाषित किया था। अवकल कलन (डिफरेंशियल कैलकुलस) के सिद्धांतों की खोज, दशमलव प्रणाली का व्यवस्थित उपयोग भी इनकी देन है। इन्होंने ज्यामिति और बीजगणित से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों- 'लीलावती' और 'बीजगणिताध्याय' की रचना की।

संगमग्राम के माधव (1340-1425 ईस्वी): यूरोपीय 'कैलकुलस' से सदियों पहले इन्होंने त्रिकोणमितीय श्रृंखला विस्तार और घात श्रृंखला की खोज की और सूर्यकेंद्रित मॉडल (हीलियोसेंट्रिक मॉडल) जैसे महत्वपूर्ण ग्रहों की गति के मॉडल विकसित किए, जिससे खगोलीय गणनाओं में क्रांति आ गई। इस प्रतिभाशाली गणितज्ञ को साइन और कोसाइन जैसे त्रिकोणमितीय फलनों के लिए अनंत श्रेणी विस्तारों में उनके अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है।

आधुनिक भारत के प्रमुख गणितज्ञों में शामिल हैं-

श्रीनिवास रामानुजन (1887-1920): रामानुजन की स्मृति में ही गणित दिवस मनाया जाता है। इन्होंने संख्या सिद्धांत, गणितीय विश्लेषण आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया। विभाजन फलन, सतत भिन्न और अनंत श्रेणी जैसे क्षेत्रों में उनकी उत्कृष्ट खोजों ने 20वीं सदी में गणित के विकास को बहुत प्रभावित किया। उन्हें अपने समय में आधुनिक विश्व का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता था।

पी.सी. महालनोबिस (1893-1972 ईस्वी): महालनोबिस दूरी और फ्रैक्टाइल ग्राफिकल विश्लेषण इनके कुछ प्रमुख योगदान हैं।

सी. आर. राव (1920-2023): भारतीय-अमेरिकी गणितज्ञ और सांख्यिकीविद् सी. आर. राव का सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, आनुवंशिकी और चिकित्सा जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शकुंतला देवी (1929-2013): शकुंतला देवी को मानव-कंप्यूटर के नाम से जाना जाता था। वे कैलकुलेटर की सहायता के बिना अपनी त्वरित मानसिक गणनाओं के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थीं। त्वरित मानसिक गणना के लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल है। *

सिने ट्रेंड / अशोक वाधवाणी

कई हिंदी फिल्मों में क्रिश्चियन परिवेश, पात्रों और गीतों को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया जाता रहा है। कुछ फिल्में क्रिसमस सेलिब्रेशन से भी जुड़ी रही हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मों में क्रिश्चियन कैरेक्टर्स क्रिसमस सेलिब्रेशन

क्रिसमस, ईसाई धर्मावलंबियों का प्रमुख त्योहार है, जो भारत सहित विश्व भर में 25 दिसंबर को मनाया जाता है। इसे 'बड़ा दिन' भी कहते हैं। बीते दौर से लेकर हाल के वर्षों तक हिंदी में ऐसी कई सारी फिल्में बनती रही हैं, जिनमें क्रिसमस सेलिब्रेशन का जिक्र आया, उससे जुड़े गीत फिल्माए गए, मुख्य पात्र या फिर पूरी कहानी ईसाई समुदाय के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। कई फिल्मों में तो ऐसे ईसाई पात्र दिखाए गए जो सिनेप्रेमियों के जेहन में आज भी दर्ज हैं।

ईसाई पात्र-परिवेश की कहानी: शोमैन राज कपूर ने ईसाई लड़की 'बॉबी' की कहानी पर फिल्म बनाई, जो हिट रही। 1973 में आई फिल्म 'बॉबी' में डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे। हिंदू लड़के और क्रिश्चियन लड़की की इस जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया। आगे चलकर, साल 1985 में इन्हीं डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर को लेकर रमेश सिप्पी ने फिल्म 'सागर' बनाई। यह डिंपल कपाड़िया की कम-बैक फिल्म थी, जिसमें उन्होंने एक क्रिश्चियन लड़की मोना डी सिल्वा की भूमिका अदा की थी।

साल 1975 में आई फिल्म 'जूली' में एक्ट्रेस लक्ष्मी ने क्रिश्चयन लड़की जूली का लीड रोल प्ले किया था। साथ ही फिल्म के अन्य प्रमुख पात्र भी ईसाई धर्म से संबंध रखने वाले ही थे। इसी नाम से साल 2004 में एक बोल्ड फिल्म बनाई गई, जिसमें नेहा धूपिया ने गोवा में रहने वाली लड़की 'जूली' का रोल किया था। संजीव कुमार की फिल्म 'देवता' (1978) और 'चेहरे पे चेहरा' (1981) की कहानी ईसाई समाज और ईसाई पात्रों के ईर्द-गिर्द घूमती है।

नाना पाटेकर, मनीषा कोईराला और सलमान खान की फिल्म 'खामोशी : द म्यूजिकल' (1996) भी एक क्रिश्चियन परिवार के इर्द-गिर्द बुनी गई प्रेम कहानी है। इसके अलावा शबाना आजमी, मार्क रॉबिंसन, इरफान खान अभिनीत 'बड़ा दिन' (1998), और 'मैरी क्रिसमस' (2024) फिल्मों का नाम क्रिसमस फेस्टिवल पर रखा गया है। इन फिल्मों में इस धर्म-संस्कृति से जुड़े रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि को भी बखूबी दर्शाया गया है।

यादगार पादरी के किरदार: ईसाई धर्मगुरु यानी पादरी को विशेष आदर, मान-सम्मान दिया जाता है। कई हिंदी फिल्मों में पादरी का कैरेक्टर निभाने वाले आर्टिस्ट्स को खूब सराहना मिली। 'दोस्त' (अभि भट्टाचार्य), 'अमर अकबर एंथोनी' (नाजिर हुसैन), 'तहलका' (जीतेंद्र), 'हत्या' (सत्येन कप्पू), 'खोज' (डैनी), 'देवता' (श्रीराम लागू) आदि कई फिल्में बनी हैं, जिनमें पादरियों के महत्वपूर्ण और यादगार रोल रहे।

कुछ पॉपुलर क्रिश्चियन कैरेक्टर: कई ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें ईसाई कैरेक्टर या सहायक पात्र लोगों को खूब पसंद आए। 'अनाड़ी' में ललिता पवार का अपनी फिल्मी इमेज के विपरीत सहृदय ईसाई महिला मिसेज एल डीसा का अविस्मरणीय रोल था। ऐसे ही फिल्म 'गैंबलर' में जाहिरा, 'मेरा नाम जोकर' में सिमी ग्रेवाल, 'वो मैं नहीं' में आशा सचदेव, 'मजबूर' में प्राण, 'अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' में नसीरुद्दीन शाह, 'जाने भी दो यारों' में सतीश शाह और 'अमर अकबर एंथोनी' में अमिताभ बच्चन द्वारा निभाया गया एंथोनी का कैरेक्टर लोग आज भी नहीं भूल पाए हैं।

गोवा में फिल्माई गई फिल्में: जब भी भारत में ईसाई परिवेश की बात होती है, गोवा का नाम सबसे पहले याद आता है। बॉलीवुड में ऐसी कई फिल्में बनीं, जिनकी अधिकतर शूटिंग गोवा में हुई। 'जोहर महमूद इन गोवा' (1965) में आई एस. जोहर और महमूद मुख्य भूमिका में थे। अमिताभ बच्चन की 'सात हिंदुस्तानी' (1969) और 'पुकार' (1983) इन तीनों फिल्मों की कहानी गोवा मुक्ति संग्राम पर आधारित थी। शाहरुख खान, सुचित्रा कृष्णमूर्ती अभिनीत 'कभी हां कभी ना' (1994) और शाहरुख खान, चंद्रचूड़ सिंह, ऐश्वर्या राय की फिल्म 'जोश' (2000) के मुख्य पात्र ईसाई ही थे। दोनों फिल्में गोवा में शूट की गईं। ऐसे ही दीपिका पादुकोण की फिल्म 'फाइंडिंग फैनी' (2014) गोवा में शूट हुई थी। इस फिल्म के सभी मुख्य पात्र ईसाई हैं। 'गो-गोवा-गॉन' (2013) गोवा में शूट की गई अलग टाइप की कॉमेडी, थ्रिलर है, जिसमें सैफ अली खान, कुणाल खेमू, पूजा गुप्ता आदि मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म के मुख्य पात्र भी क्रिश्चियन ही हैं। गोवा में शूट की गई अधिकतर फिल्मों में वहां के चर्च, बीच, ईसाई समुदाय के लोगों की जीवनशैली और संस्कृति को खूबसूरती से फिल्माया जाता रहा है। *

'अमर अकबर एंथोनी' में एंथोनी गोंसाल्वेस के रोल में अमिताभ

कई गीत भी हुए पॉपुलर

बॉलीवुड फिल्मों में ऐसे कई गाने भी बने हैं, जो पूरी तरह क्रिसमस से जुड़े हैं। इनमें से कुछ पॉपुलर भी हुए हैं। 'बचपन' फिल्म का गीत 'मदर मैरी, मां हम तेरे दुलारे हैं' प्रेयर है। 'शानदार' में संजीव कुमार सांता क्लॉज की वेशभूषा में गाते हैं, 'आता है, आता है, सांता क्लॉज आता है', 'जख्मी' में 'जिंगल बेल, जिंगल बेल, जिंगल ऑल द वे।' कई गीत ऐसे भी रचे हैं, जिनको सुनते ही समझ आ जाता है कि ये गीत या इसके पात्र ईसाई धर्म से जुड़े हुए हैं। फिल्म 'जमीर' में शम्मी कपूर पर फिल्माया गया गीत 'बड़े दिनों में खुशी का दिन आया...'। 'जूली' में प्रीती सागर की आवाज में अंग्रेजी गाना है, 'माइ हार्ट इज बीटिंग', 'जीते हैं शान से' में 'जूली-जूली जॉनी का दिल तुम पर आया जूली।' गाने में मिथुन चक्रवर्ती अपना प्रेम प्रकट करते हैं। 'सागर' में 'ओ मारिया, ओ मारिया' गाने में कमल हासन, डिंपल कपाड़िया की मस्ती देखने लायक है। 'देवता' का हटकर लिखा गाना है, 'चल बैठें चर्च के पीछे'। ये सभी गाने आज भी लोकप्रिय हैं।